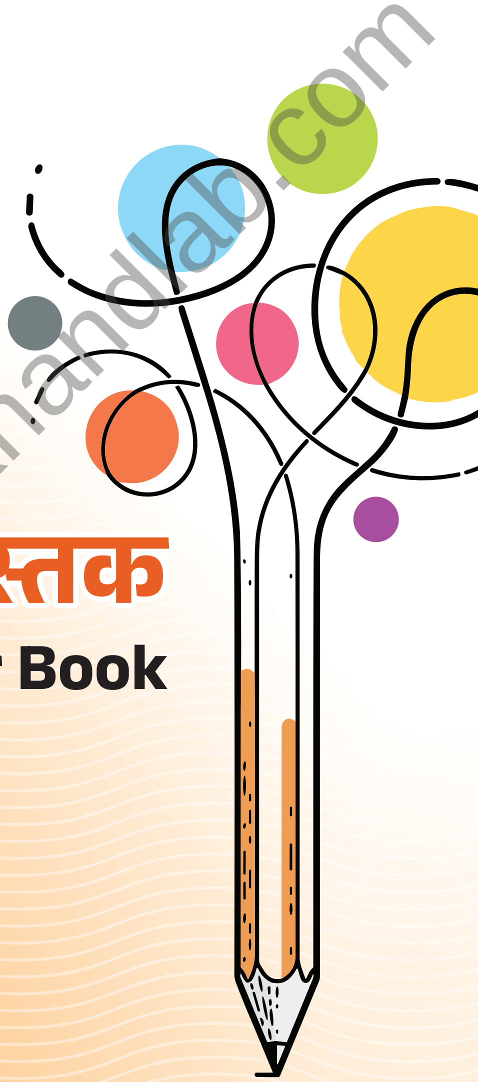

प्रश्न बैंक-सह-उत्तर पुस्तक

Question Bank–Cum–Answer Book

2023

Class-12

संस्कृत
(SANSKRIT)

✓ शाश्वती द्वितीयो भागः

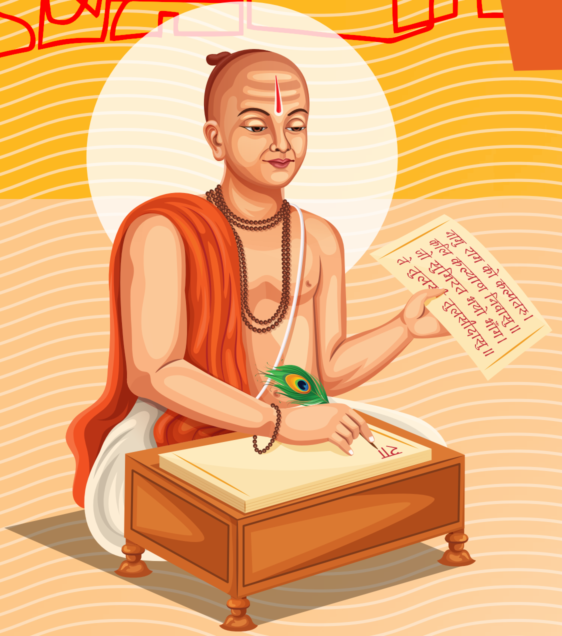

jharkhandlab.com

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक
Question Bank-Cum-Answer Book

Jharkhandlab.com

Class - 12

संस्कृत
Sanskrit

2023

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रथम संस्करण : माह अगस्त 2023, श्रावण विक्रम संवत् 2080

© झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड

Jharkhandlab.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, छायाप्रतिलिपि अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण या जिल्द के साथ अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्‌वारा उधारी या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

- **क्रय–विक्रय दण्डनीय अपराध**

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

jharkhandlab.com

बच्चों के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने का मार्ग सरल एवं सुगम होना आवश्यक है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड के द्वारा कक्षा 12 के सभी विषयों के लिए प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण बच्चों के अधिगम कौशल को सुगमतापूर्वक विकसित करने एवं झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उन्हें तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में सरल भाषा एवं रुचिकर ढंग से विषय–वस्तु को स्पष्ट करते हुए प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के माध्यम से बच्चों में न केवल ज्ञानजन्य प्रतिभा का विकास होगा बल्कि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में भी वे अनुकूल सफलता पाएंगे। हमारे प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय के शिक्षकवृन्द बच्चों की कल्पनाओं के साथ कितना जुड़ पाते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तरों को सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभवों के साथ–साथ बच्चों के विचारों के साथ कैसे सामंजस्य बनाते हैं।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के विविध प्रकारों यथा– बहुवैकल्पिक, अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आदि के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नोत्तर समाहित किए गए हैं ताकि इसके अध्ययन से छात्रों में ना केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित हो बल्कि उन्हें सीखने के प्रतिफल की भी प्राप्ति हो, साथ ही वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उनकी अच्छी तैयारी हो सके और वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

अंत में मैं इन पुस्तकों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

के० रवि कुमार भा.प्र.से.
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

भूमिका

Jharkhandlab.com

प्रिय शिक्षक एवं विद्यार्थी,

जोहार !

हमें कक्षा 12 के विभिन्न विषयों के प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक से आपका परिचय कराने में प्रसन्नता हो रही है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के विषयवार एवं अध्यायवार अधिगम बिन्दुओं को समायोजित करते हुए झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जानेवाले प्रश्नों के विविध प्रकारों के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस विषय आधारित प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक रुचिकर, सरल एवं प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा की तैयारियों में सहयोग प्रदान करना है, जिससे सकारात्मक रूप से छात्रों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त हों और वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित अनुभवी शिक्षकों के द्वारा इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हुए वैचारिक समझ (Conceptual Understanding) विकसित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही इन पुस्तकों में झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा – 2023 के प्रश्नोत्तर को भी समाहित किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा बल्कि वर्तमान समय के प्रतियोगिताओं के इस दौर में वे अनुकूल एवं अपेक्षित सफलता प्राप्त करने में भी सक्षम हो सकेंगे। आशा है कि यह प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक आपको पसंद आएगी एवं आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

किरण कुमारी पासी भा.प्र.से.
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
राँची, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

पाठकों से अनुरोध

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण में काफी सावधानियाँ बरती गई है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार की अशुद्धियाँ मिले या कोई सुझाव हो तो इस email ID :- jcertquestionbank@gmail.com पर सूचित करें, ताकि अगले मुद्रण में इसे शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य संरक्षक

श्री के० रवि कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

संरक्षक

श्रीमती किरण कुमारी पासी (भा.प्र.से.)
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

अवधारणा एवं मार्गदर्शन

श्री मुकुंद दास उपनिदेशक (प्र.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री बाँके बिहारी सिंह** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री मसुदी टुडू** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

समन्वय एवं निर्देशन

डॉ0 नीलम रानी
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(टी.जी.टी., सामाजिक विज्ञान, राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा)

सहयोग

श्री मणिलाल साव
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(पी.जी.टी. जीव विज्ञान, के. एन. +2 उच्च विद्यालय हरनाद, कसमार, बोकारो)

Jharkhandlab.com

jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक निर्माण कार्य समिति

डॉ. सरिता सिन्हा
PGT (संस्कृत)
राज्य सम्पोषित +2 उच्च विद्यालय, पतरातू, रामगढ़

डॉ. आशा रानी
PGT (संस्कृत)
+ 2 उच्च विद्यालय, चन्दनकियारी, बोकारो

डॉ. भारती कुमारी महतो
PGT (संस्कृत)
राज्य सम्पोषित +2 उच्च विद्यालय, सिल्ली, राँची

शबनम कुमारी
PGT (संस्कृत)
बालकृष्णा +2 उच्च विद्यालय, राँची

Jharkhandlab.com

विषयानुक्रमणिका

क्रम.	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
प्रथमः पाठः	विद्ययाऽमृतमश्नुते	1—2
द्वितीयः पाठः	रघुकौत्ससंवादः	3—4
तृतीयः पाठः	बालकौतुकम्	5—6
चतुर्थः पाठः	कर्मगौरवम्	7—10
पंचमः पाठः	शुकनासोपदेशः	11—12
षष्ठः पाठः	सूक्तिसुधा	13—15
सप्तमः पाठः	विक्रमस्यौदार्यम्	16—18
अष्टमः पाठः	भू—विभागाः	19—21
नवमः पाठः	कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्	22—23
दशमः पाठः	दीनबन्धुः श्रीनायारः	24—25
एकादशः पाठः	उद्भिज्ज—परिषद्	26—28
द्वादशः पाठः	किन्तोः कुटिलता	29—31
त्रयोदशः पाठः	योगस्य वैशिष्टयम्	32—33
चतुर्दशः पाठः	कथं शब्दानुशासनं कर्तव्यम्	34—36
	JAC वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2023 - प्रश्नोत्तर	37—36

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

प्रथम : पाठः	विद्ययाऽमृतमश्नुते

Jharkhandlab.com

Q 1. अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् उत्तरत -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधःकस्यस्विद्धनम् ॥

(क) एकपदेन उत्तरत-

(1) सर्वं जगत् केन आवास्यम् ?
उत्तर- ईशा

(II) कस्यस्वित् किं मा गृधः?
उत्तर- धनम्

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(I) अस्माभिः कथं भोक्तव्यम् ?
उत्तर- अस्माभिः त्यक्तेन भोक्तव्यम् ।

(ग) त्यक्तेन इत्यत्र का विभक्तिः ?
उत्तर- तृतीया

अधोलिखितस्य श्लोकस्य अन्वयं लिखत-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।

उत्तर- इह शतम् समाः कर्माणि कुर्वन् एव
जिजीविषेत् । इतः अन्यथा न अस्ति एवम्
त्वयि नरे कर्म लिप्यते न ।

संस्कृतभाषायाम् उत्तरं लिखत-

(क) ईशावास्योपनिषद् कस्याः संहितायाः भागः?
उत्तर- ईशावास्योपनिषद् यजुर्वेदस्य माध्यन्दिन-संहितायाः भागः अस्ति।

(ख). जगत्सर्वं कीदृशम् अस्ति ?
उत्तर- जगत्सर्वं ईशावास्यम् अस्ति।

(ग.) पदार्थभोगः कथं करणीयः?
उत्तर- पदार्थभोगः त्यागभावेन करणीयः।

(घ.) शतं समाः कथं जिजीविषेत् ?
उत्तर- शतं समाः कर्माणि कुर्वन् जिजीविषेत्।

(ड.) आत्महनो जनाः कीदृशं लोकं गच्छन्ति ?
उत्तर- आत्महनो जनाः असुर्या नामकं लोकं गच्छन्ति।

(च.) मनसोऽपि वेगवान् कः ?
उत्तर- मनसोऽपि वेगवान् आत्मा।

(छ.) तिष्ठन्नपि कः धावतः अन्यान् अत्येति?
उत्तर- तिष्ठन्नपि आत्मा धावतः अन्यान् अत्येति।

(ज.) अन्धन्तमः के प्रविशन्ति ?
उत्तर- ये अविद्याम् उपासते ते अन्धन्तमः प्रविशन्ति

(झ) धीरेभ्यः ऋषयः किं श्रुतवन्तः?
उत्तर- धीरेभ्यः ऋषयः श्रुतवन्तः यत् विद्यया अन्यत् फलं भवति अविद्यया च अन्यत् फलम् भवति।

(ञ) अविद्यया किं तरति?
उत्तर- अविद्यया मृत्युं तरति।

(ट) विद्यया किं प्राप्नोति
उत्तर- विद्यया अमृतं प्राप्नोति।

एकपदेन उत्तरत

(1) सर्वं जगत् केन आवास्यम् ?
उत्तर- ईशा

(2) कस्यस्वित् किं मागृधः?
उत्तर- धनम्

(3) त्यक्तेन इत्यत्र का विभक्ति ?
उत्तर- 'तृतीया'

(4) मृत्युम् शब्दस्य विलोम पदम् लिखत।
उत्तर- जीवनम्

(5) केन आवृताः असुर्या नाम लोकाः ?
उत्तर- तमसा

(6) तान् के प्रत्याभिगच्छन्ति ?
उत्तर- आत्महनोजनाः

(7) अन्धेन तमसा ऽऽवृता के ?
उत्तर- लोकाः

(8) तीर्त्वा पदे कः प्रत्ययः ?
उत्तर-. क्त्वा

(9) कया अमृतम्ऽश्नुते ?
उत्तर- विद्यया

अधोलिखितानां समुचितं योजनं कुरुत

(क) धनम्-	**(1) वायुः**
(ख) समाः-	**(2) आत्मनं ये घ्नन्ति**
(ग) असुर्याः-	**(3) श्रुतवन्तः स्म**
(घ) आत्महनः-	**(4) तमसाऽऽवृताः**
(ड.) मातरिश्वा -	**(5) वर्षाणि**
(च) शुश्रुम -	**(6) अमरता**
(छ) अमृतम् -	**(7) वित्तम्**

उत्तर-

(क) धनम्	(7) वित्तम्
(ख) समाः	(5) वर्षाणि
(ग) असुर्याः	(4) तमसाऽऽवृता
(घ) आत्महनः	(2) आत्मानं ये घ्नन्ति
(ड.) मातरिश्वा	(1) वायुः
(च) शुश्रुम	(3) श्रुतवन्तः स्म।
(छ) अमृतम्	(6) अमरता।

Q प्रकृति प्रत्ययं च योजयित्वा पद रचनां कुरुत।

त्यज् + क्त	=	त्यक्तः
कृ + शतृ	=	कुर्वन्
तत् + तसिल्	=	ततः
प्रेत्य	=	प्र + इण् + ल्यप् प्रत्यय
तीर्त्वा	=	तृ + क्त्वा प्रत्यय
धावतः	=	धाव् + शतृ प्रत्यय
तिष्ठत्	=	स्था + शतृ प्रत्यय
जवीयः	=	जव् + मतुप् + इयसुन्

Q सन्धि सन्धिविच्छेदं वा कुरुत

(क)	ईशावास्यम्	=	ईशा + आवास्यम्
(ख)	कुर्वन्नेवेह	=	कुर्वन्+एव+ इह
(ग)	जिजीविषेत् + शतं	=	जिजीविषेच्छतम्
(घ)	तत् + धावतः	=	तद्धावतः
(ड.)	अनेजत् + एकम्	=	अनेजदेकम्
(च)	आहुः + अविधया	=	आहुर्विद्यया
(छ)	अन्यथेतः	=	अन्यथा + इतः
(ज)	तांस्ते	=	तान् + ते

प्रदत्तेषु विकल्पेषु उचितम् उत्तरं चिनुत

(1) विद्ययामृतमश्नुते पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः ?
(क) माण्डूक्योपनिषदः (ख) तैत्तिरीयोपनिषदः
(ग) ईशावास्योपनिषदः (घ) छान्दोग्योपनिषदः

(2) ईशावास्योपनिषदः कस्याः संहितायाः भागः ?
(क) यजुर्वेदस्य (ख) सामवेदस्य
(ग) अथर्ववेदस्य (घ) ऋग्वेदस्य

(3) विद्यया किं प्राप्नोति ?
(क) विषम् (ख) अमृतम्
(ग) विवादम् (घ) कलहम्

(4) मनसोऽपि वेगवान् कः ?
(क) नेत्रम् (ख) जनः
(ग) आत्मतत्व : (घ) वायुः

(5) पदार्थः भोगः कथं करणीयः ?
(क) शोकभावेन (ख) हर्षभावेन
(ग) संचयभावेन (घ) त्यागभावेन

(6) शतं समाः किं कुर्वन् जिजीविषेत् ?
(क) कर्म (ख) योगम्
(ग) गगनम् (घ) पठनम्

(7) मातरिश्वा इत्यस्य पर्यायपदं किम्?
(क) अग्नि (ख) जलम्
(ग) विद्या (घ) वायुः

(8) कः अपः ददाति ?
(क) तमसा (ख) आत्महनः
(ग) मातरिश्वा (घ) लोकाः

(9) तमसा इत्यस्य विलोम पदं किम्?
(क) प्रकाशेन (ख) अन्धकारेन
(ग) उभयो (घ) तमः

(10) 'गच्छन्ति' क्रिया पदे क : लकारः
(क) विधिलिंग (ख) लोट्
(ग) लृट् (घ) लट्

(11) ईशावास्यम् पदस्य विच्छेदं चिनुत
(क) ईश + वास्यम् (ख) ईशा + आवास्यम्
(ग) ईशा + वास्यम् (घ) ईश + वास्य

उत्तर- (1) ग (2) क (3) ख (4) ग (5) घ (6) क (7) घ (8) (ग) (9) क (10) घ (11)(ख)

Q. अधोलिखितस्य श्लोकस्य अन्वये रिक्तस्थानेषु उचितानि पदानि पूरयत-

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तांस्ते प्रत्याभिगच्छन्ति ये के आत्महनो जनाः।।

अन्वयः - ये के च ---------------- (i) जनाः ते प्रेत्य अन्धेन
-------------- (ii) आवृता ----------------(iii) नाम लोकाः ------------ -----(iv)

उत्तर- (i) आत्महनो
(ii) तमसा
(iii) असुर्या
(iv) अभिगच्छन्ति

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः।।

ये अविधाम्,------------------- ते अन्धन्तमः 2---------------
ये 3------------- रता : ते इन ततः भूयः (4)---------------

उत्तर- 1 उपासते, 2 प्रविशन्ति, 3 विद्यायां, 4 तमः

अन्यदेवाहुर्विद्यया अन्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये न नस्तद्विचक्षिरे।।

विद्यया अन्यत् 1 --------- अविद्यया 2 ----------- आहुः
धीराणाम् ये नः 3----------तत् 4 -------

उत्तर- 1 आहुः, 2 अन्यत् 3 विचचक्षिरे, 4 शुश्रुम

Jharkhandlab.com

द्वितीय : पाठः रघुकौत्ससंवादः

Jharkhandlab.com

संस्कृतभाषया उत्तरत–

(क) कौत्सः कस्य शिष्यः आसीत्?

उत्तर– वरतन्तोः।

(ख) रघुः कम् अध्वरम् अनुतिष्ठति स्म?

उत्तर– विश्वजित्।

(ग) कौत्सः किमर्थं रघुं प्राप?

उत्तर–धनं याचितुम्।

(घ) मंत्रकृताम् अग्रणी कः आसीत्?

उत्तर–वरतन्तुः।

(ङ.) कौत्सस्य गुरूः गुरूदक्षिणात्वेन कियद्धनम् देयमिति आदिदेश?

उत्तर–चतुर्दशकोटिः धनम्।

पठितावबोधनम्

तमध्वरे विश्वजिति क्षितीशं,
निःशेषविश्राणितकोषजातम्।
उपातविद्योगुरूदक्षिणार्थी,
कौत्सः प्रपेदे वरतन्तु शिष्यः।।

उपर्युक्तं पद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नाननामुतराणि यथानिर्देशं लिखत–

(क) एकपदेन उतरत–

1. वरतन्तोः शिष्यः कः अस्ति?

उत्तर–कौत्सः

2. क्षितीशः कस्मिन् समग्रकोषं दत्तवान्?

उत्तर– विश्वजिति अध्वरे।

(ख.) पूर्ण वाक्येन उत्तरत–

कौत्सः कीदृशस्य क्षितीशस्य समीपे गतवान् ?

उत्तर–कौत्सः विश्वजिति अध्वरे निःशेषविश्राणितकोषजातस्य क्षितीशस्य
समीपे गतवान् ।

विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत

1. 'विश्वजित्' इति विशेषणस्य विशेष्यपदं किम् ?

(अ) अध्वरे (ब) निःशेष
(स) क्षितीशम् (द) कौत्सः

उत्तर– अ. अध्वरे

2. 'प्रपेदे' इति क्रियापदस्य पद्यांशे कर्तृपदं किम् ?

(अ) कोषजातम् (ब) तम्
(स) कौत्सः (द) क्षितीश

उत्तर–स. कौत्सः

3. अस्मिन् पद्ये 'तम्' इति सर्वनामपदस्य संज्ञा पदम् किम?

(अ) अध्वर (ब) क्षितीशम्
(स) कौत्सः (द) वरतन्तुशिष्यः

उत्तर–ब. क्षितीशम्

4. 'यज्ञे' इत्यर्थ पदस्य अत्र कः पर्यायः?

(अ) निःशेषे (ब) क्षितीशम्
(स) विश्वजिति (द) अध्वरे

उत्तर–द. अध्वरे

पठितावबोधनम् कार्यम्

सर्वत्र नो वार्तम वेहि राजन्!
नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्।
सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः
कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा ।

(क.) एकपदेन उत्तरत –

1. नाथे सति केषाम् अशुभं न भवति ?

उत्तर–प्रजानाम्

2. तमिस्रा कस्य दृष्टिं अवरूद्धं करोति ?

उत्तर–लोकस्य

ख. पूर्णवाक्येन उत्तरत –

1. सूर्ये तपति किं भवति ?

उत्तर–सूर्ये तपति अंधकारः लोकस्य दृष्टिम् अवरोद्धुं न शक्नोति।

ग. विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत –

1. 'सूर्ये' इत्यस्य क्रियापदं किमस्ति ?

(अ) कल्पेत (ब) तपति
(स) अवेहि (द) आवरणाय

उत्तर–ब. तपति

2. 'त्वयि' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(अ) कौत्साय (ब) सूर्याय
(स) अंधकाराय (द) रघवे

उत्तर–द. रघवे

3. 'शुभम्' इत्यस्य पद्यांशे विलोमपदं किम्?

(अ) अशुभम् (ब) अमंगलम्
(स) आवरणम् (द) तमिस्रा

उत्तर–अअशुभम्

4. 'अंधकारः' इत्यस्य पद्यांशे पर्यायपदं किम्?

(अ) आवरणम (ब) दृष्टेः

(स) तमिस्राः (द) कल्पेत

उत्तर– स. तमिस्राः

"सर्वत्र नो वार्तम वेहि राजन्
नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्।
सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टे
कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा।।"

उपर्युक्त पद्याशं आधृत्य अन्वयं निर्माणं कुरूत–

अन्वय – राजन् ! त्वम् सर्वत्र नः वार्तम् अवेहि। त्वयि नाथे सति प्रजानां अशुभं कुतः? सूर्ये तपति सति तमिस्रा लोकस्य दृष्टे आवरणाय कथं कल्पेत ।

मंञ्जूषायाः सहायतायाः अन्वयं पूर्तिं कुरूत –

मंञ्जूषा– प्रजानाम् , लोकस्य, सर्वत्र, तपति

अन्वय–राजन्, त्वम . . . . नः वार्तम् अवेहि । त्वयि नाथे सति . . . . अशुभम् कुतः ? सूर्ये . . . . . . सति तमिस्रा . . . . दृष्टेः आवरणाय कथं कल्पेत् ।

उत्तर–सर्वत्र , प्रजानाम् , तपति, लोकस्य ।

अधोलिखितरचनानाम् लेखकानां नामानि लिखतः–

रचना		रचनाकाराः
(क) पंचतंत्रम्	–	विष्णु शर्मा
(ख) रामायणम्	–	महर्षि वाल्मीकिः
(ग) मुद्राराक्षसम्	–	विशाखदत्तः
(घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	महाकविः कालिदासः
(ड़) महाभारतम्	–	महर्षिः वेदव्यासः
(च) हितोपदेशम्	–	नारायणपण्डितः
(छ) शिवराजविजयम्	–	अम्बिकादत्तः व्यासः
(ज) रघुवंशम्	–	महाकविः कालिदासः
(झ) शिशुपालवधम्	–	महाकविः माघः
(ञ) किरातार्जुनीयम्	–	महाकविः भारविः
(ट) नीतिशतकम्	–	भर्तृहरिः
(ठ) ऋतुसंहारम्	–	महाकविः कालिदासः
(ड) गीतगोविन्दम्	–	जयदेवः
(ढ) कादम्बरी	–	बाणभट्टः
(ण) दशकुमारचरितम्	–	दण्डीः
(त) बुद्धचरितम्	–	अश्वघोषः
(थ) मृच्छकटिकम्	–	शूद्रकः
(द) महावीरचरितम्	–	भवभूतिः
(ध) उत्तररामचरितम्	–	भवभूतिः
(न) वेणीसंहार	–	भट्टनारायणः
(प) शुकनासोपदेशः	–	बाणभट्टः

Jharkhandlab.com

तृतीयःपाठः बालकौतुकम्

jharkhandlab.com

अधोलिखितं नाट्यांशम् पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् उत्तरत -

जनक :- **अये शिष्टानध्याय इत्यस्खलितं खेलतां बटूनां कोलाहलः**

कौसल्या :- **सुलभसौख्यमिदानीं बालत्वं भवति। अहो, एतेषां मध्ये क एष रामभद्रस्य मुग्धललितैरङ्गै- दारकोऽस्माकं लोचने शीतलयति?**

अरुन्धती - कुवलयस्निग्धश्यामः शिखण्डकमण्डनो

वटुपरिषदं पुण्यश्रीकः प्रियैव सभाजयन्

पुनरपि शिशुर्भूतो वत्सः स मे रघुनन्दनो

झटिति कुरुते दृष्टःकोऽयंदृशोरमृताञ्जनम्।।

(क) एकपदेन उत्तरत

(i) **मुखललितैः अंगैः कं शीतलयति?**

उत्तर- लोचनं।

(ii) **बालत्वं कीदृशं भवन्ति?**

उत्तर- सुलभसौख्यम्।

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) **कयो: अमृताञ्जनं कुरुते ?**

दृशो: अमृताञ्जनं कुरुते ।

(ii) **कया वटुपरिषदं सभाजयन् अस्ति ?**

श्रिया वटुपरिषद् सभाजयन् अस्ति ।

(ग) निर्देशानुसारम् उत्तरत-

(i) **नेत्रयोः किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?**

उत्तर- लोचने

(ii) **मुग्धललितैः इति विशेषणस्य अत्र विशेष्यपदं किम् ?**

(क) अङ्गैः **(ख) दारकः**

(ग) लोचने **(घ) रामभद्रस्य**

उत्तर- अङ्गैः

नाट्यांशः

लवः:- (प्रविश्य, स्वगतम्) अविज्ञातव्यः क्रमौचित्यात् पूज्यानपि सतः कथमभिवादयिष्ये ? (विचिन्त्य) अर्थ पुनरविरुद्धप्रकार इति वृद्धेभ्यः श्रूयते (सविनयमुपसृत्य) एष वो लवस्य शिरसा प्रणामपर्यायः।

अरुन्धती जनकौ: -कल्याणिन्! आयुष्मान् भूयाः।

कौशल्या : -जात! चिरं जीव।

अरुन्धतीः -एहि वत्स! (लवमुत्सङ्गे गृहीत्वा आत्मगतम्) दिष्ट्या न केवलमुत्सङ्गश्चिरान्मनोरथोऽपि मे पूरितः।

कौशल्याः -जात! इतोऽपि तावदेहि। (उत्सङ्गे गृहीत्वा) अहो न केवल मांसलोज्ज्वलेन देहवन्धेन, कलहंसघोषः

-घर्घरानुनादिना स्वरेण च रामभद्रमनुसरति जात! पश्यामि ते मुखपुण्डरीकम्। राजर्षे किं न पश्यसि निपुणं निरूप्यमाणो वत्साया मे वध्वा मुखचन्द्रेणापि संवदत्येव।

(क) एकपदेन उत्तरत

(i) **कौसल्या कस्य मुखं पुण्डरीकं पश्यति?**

उत्तर- लवस्य

(ii) **लवं कस्मिन् गृहीत्वा अरुन्धत्याः मनोरथः पूरितः ?**

उत्तर- उत्सङ्गे

ख पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) **लवः रामभद्रं केन अनुसरति ?**

लवः रामभद्रं देहबन्धेन स्वरेण च अनुसरति ।

(ग) निर्देशानुसारम् उत्तरत-

(i) **घर्घरानुनादिना इति विशेषणस्य अत्र विशेष्य पदं किम् ?**

(क) देहबन्धेन **(ख) मुखेन**

(ग) स्वरेण **(घ) रामभद्रेण**

उत्तर- (ग) स्वरेण

(ii) **क्रोडे इति पदस्य अत्र कः पर्याय ?**

(क) मध्ये **(ख) उत्सङ्गे**

(ग) देहे **(घ) शरीरे**

उत्तर- (ख) उत्सङ्गे

नाट्यांशः

बटवः अये, श्रूयताम्

पाश्चात्पुच्छं वहति विपुलं तच्च धूनोत्यजस्रम्

दीर्घग्रीवः स भवति खुरास्तस्य चत्वारः एव

शष्पाण्यत्ति प्रकिरति शकृत्पिण्डकानाम्रमात्रान्

किं व्याख्यानैर्व्रजति स पुनर्दूरह्येहियामः

(इत्यजिने हस्तयोश्चाकर्षन्ति)।।

(क) एकपदेन उत्तरत

(i) **पुच्छं कुत्र वहति**

उत्तर-- पश्चात्।

(ii) **अजस्रं किं धुनोति**

उत्तर-पुच्छम्।

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(i) **अश्वस्य कति खुराः भवन्ति**

उत्तर- अश्वस्य चत्वारः खुराः भवन्ति ?

(ii) **अश्वः किं प्रकिरति ?**

उत्तर- अश्वः आम्रमात्रान् शकृत्पिण्डकान् प्रकिरति ।

(ग) निर्देशानुसारम् उत्तरत

पुच्छम् इति विशेष्यपदस्य अत्र विशेषणं किम्?

उत्तर- विपुलम्

नाट्यांशः

कौशल्या -जात ! अस्ति ते माता ? स्मरसि वा तातम् ?

लवः -नहि।

कौशल्या -ततः कस्य त्वम् ?

लवः -भगवतः सुगृहीतनामधेयस्य वाल्मीकेः।

कौशल्या -अयि जात। कथयितव्यं कथय ।

लवः -तावदेव जानामि (प्रविश्य सम्भ्रान्ताः)

वटवः -कुमार ! कुमार । अश्वोऽश्व इति कोऽपि भूतविशेषो जनपदेष्वनुश्रूयते, सोऽयमधुनाऽस्माभिःस्वयं प्रत्यक्षीकृतः।

लवः -'अश्वोऽश्व' इति नाम पशुसमाम्नाये सांग्रामिके च पठ्यते तद् ब्रूत -कीदृशः?

(क) एकपदेन उत्तरत-

(i) **अश्वः कस्मिन् समाम्नाये पठ्यते ?**

उत्तर- पशुसमाम्नाये।

(ii) **बटवः स्वयं किं प्रत्यक्षीकृतः ?**

उत्तर- अश्वः

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(i) **लवः स्वपितुः नाम किमुक्तवान्?**

उत्तर- भगवतः सुगृहीत नामधेयस्य वाल्मीकेः।

(ii) **स्मरसि वा तातम् ? इति का उक्तवती ?**

उत्तर- स्मरसि वा तातम् इति कौशल्याउक्तवती।

(ग निर्देशानुसारम् उत्तरत-

(i) **'पुत्र' इत्यर्थे किं पदं नाट्यांशे प्रयुक्तम् ?**

उत्तर- जात

संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्

(क) **उत्तररामचरितम् इति नाटकस्य रचयिता कः ?**

उत्तर- उत्तररामचरितम् इति नाटकस्य रचयिता महाकविः भवभूतिः।

(ख) **नेपथ्ये कोलाहलं श्रुत्वा जनकः किं कथयति ?**

उत्तर- नेपथ्ये कोलाहलं श्रुत्वा जनकः कथयति यत् अद्य खलु शिष्टानध्याय इत्यस्खलितं खेलतां बटूनां कोलाहलः।

(ग) **लवः रामभद्रं कथं अनुसरति?**

उत्तर- लवः मांसलोज्ज्वलेन देहबन्धेन कलहंसघोष-घर्घरानुनादिना स्वरेण च रामभद्रं अनुसरति।

(घ) **बटवः अश्वं कथं वर्णयन्ति?**

उत्तर- बटवः अश्वं वर्णयन्ति पश्चात्पुच्छं वहति तत् च अजस्रं धुनोति सः दीर्घग्रीवः अस्ति चत्वारः खुराः सन्ति शष्पाणि अत्ति शकृत् पिण्डकान् आम्रमात्रान् प्रकिरति।

(ङ) **लवः कथं जानाति यत् अयम् आश्वमेधिकः अश्वः ?**

उत्तर- अश्वस्य रक्षकान् दृष्ट्वा लवःजानाति यत् अयम् आश्वमेधिकःअश्वः।

(च) **राजपुरुषस्य तीक्ष्णतरा आयुधश्रेणयः किं न सहन्ते?**

उत्तर- शिशोः अपि दृष्टतां वाचं न सहन्ते।

रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत ।

(क) **'अश्वमेध' इति नाम <u>क्षत्रियाणाम्</u> महान् उत्कर्षनिकषः।**

(ख) **हे बटवः! <u>लोष्टैः</u>**

अभिघ्नन्तः उपनयत एनम् अश्वम्।

(ग) **रामभद्रस्य एष <u>दारकः</u> अस्माकं लोचने शीतलयति ।**

(घ) **उत्पथैः <u>मम</u> मनः पारिप्लवं धावति।**

(ङ) **अतिजवेन दूरमतिक्रान्तः स <u>चपलः</u> दृश्यते ।**

(च) **विस्फारितशरासनाः आयुधीय श्रेणयः <u>कुमारं</u> तर्जयन्ति ।**

(छ) **निपुणं निरूप्यमाणः लवः मुखचन्द्रेण <u>सीतया</u> संवदत्येव ।**

उत्तर-

(क)	केषां	(ख)	कैः
(ग)	कः	(घ)	कस्य
(ङ)	कीदृशः	(च)	कं
(छ)	कया		

अधः समस्तपदानां विग्रहाः दत्ताः । उदाहरणमनुसृत्य समस्तपदानि रचयत, समासनामापि च लिखत ।

(क) **विनयेन शिशिरः**

(ख) **अयस्कान्तस्य शकलः**

(ग) **दीर्घा ग्रीवा यस्य सः**

(घ) **मुखम् एव पुण्डरीकम्**

(ङ) **पुण्यः चासौ अनुभावः**

(च) **न स्खलितम्**

उत्तर-
(क) विनयशिशिरः-तृ० तत्पुरुषः
(ख) अयस्कान्तशकलः-ष० त०पु०
(ग) दीर्घग्रीवः-बहुव्रीहिः
(घ) मुखपुण्डरीकम्-कर्मधारयः
(ङ) पुण्यानुभावः-कर्मधारयः
(च) अस्खलित-नञ् तत्पुरुषः

jharkhandlab.com

चतुर्थ : पाठः | कर्मगौरवम्

(I) संस्कृतभाषया उत्तरत—

(क) अयं पाठः कस्मात् ग्रन्यात् सङ्कलितः ?

उत्तर—श्रीमद्भगवद्गीतायाः।

(ख) लोकः कम् अनुवर्तते ?

उत्तर—श्रेष्ठाणां प्रमाणम् ।

(ग) बुद्धियुक्तः अस्मिन् संसारे के जहाति ?

उत्तर—सुकृतदुष्कृते

(घ) कः संन्यासी कथ्यते ?

उत्तर—यः कर्मफलं अनाश्रितः कर्म करोति सः संन्यासी कथ्यते ।

(2) पठितावबोधनं कार्यम्—

सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि 10

एकपदेन उत्तरत—

(क)1. श्रीकृष्णः कं युद्धाय प्रेरयति ?

उत्तर—अर्जुनम् ।

(2.) युद्धकारणात् किम् न प्राप्स्यति ?

उत्तर—पापम् ।

(II) पूर्ण वाक्येन उत्तरत —

किम् समे कृत्वा युद्धाय युज्यस्व ?

उत्तर—सुखदुःखे, लाभालाभौ, जयाजयौ, समे कृत्वा युद्धाय युज्यस्व।

(III) प्रदतविकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत —

(1.) 'युज्यस्व' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?

(क) त्वम् (ख) सः
(घ) ततः (घ) युद्धाय

उत्तर—(क) त्वम्

(2.) 'सुखं' इति पदस्य अत्र विलोमपदं किम् ?

(क) दुःखं (ख) समे
(ग) अलाभः (घ) जयः

उत्तर—(क) दुःखं

(3.) 'पराजयः' इत्यर्थे अत्र कः पर्यायः ?

(क) दुःखम् (ख) जयः
(ग) अलाभः (घ) संजयः

उत्तर—ख) जयः

(IV) अधोलिखितमञ्जूषायाः सहायताया अन्वयस्य पूर्ति कुरुत—

मञ्जूषा – पापं, लाभालाभौ, युद्धाय ।

अन्वयः– सुखदुःखे........जयाजयौ समे कृत्वा ततः........
.......युज्यस्व एवं..............न अवाप्स्यसि ।

उत्तर – लाभालाभौ, युद्धाय, पापं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गो स्त्वकर्मणि 11131

(V) उपर्युक्तं पद्यांशं पठित्वा तदाधारितप्रश्नानामुतराणि यथानिर्देशं लिखत –

(क) एकपदेन उत्तरत—

(i) कस्मिन् एव ते अधिकार : ?

उत्तर—कर्मणि

(ii) त्वं कस्य फलहेतुः न।

उत्तर—कर्मफलहेतुः ।

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

1. ते कुत्र संगः मा अस्तु ?

उत्तर—मे अकर्मणि संगः मा अस्तु ।

(VI) प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत—

1. 'अस्तु' इति क्रियापस्य कर्तृपदं किम् ?

(अ) हेतुः (ब) अधिकारः
(स) सङ्गः (द) ते

उत्तर—(स) सङ्गः

(2.) 'ते' इति सर्वनामपदम् अत्र कस्मै प्रयुक्तम् ?

(अ) अर्जुनाय (ब) कृष्णाय
(स) भीमाय (द) युधिष्ठिराय

उत्तर –(अ) अर्जुनाय

(3.) 'कर्मणि' इत्यस्य विलोमपदं किम् ?

(अ) अधिकार (ब) सङ्गः
(स) फलेषु (द) अकर्मणि

उत्तर—(द) अकर्मणि

(4.) 'नहि' इत्यर्थे अत्र कः पर्यायः ?

(अ) भूः ब) मा
(स) अस्तु (द) हेतुः

उत्तर—(ब) मा

Jharkhandlab.com

(VII) अधोलिखितानां शब्दानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत–

(क) बुद्धिहीनः – बुद्धियुक्तः
(ख) न्यूनः – ज्यायः
(ग) दुर्गुणैः – गुणैः
(घ) अकौशलम् – कौशलम्
(ङ.) लाभः – हानि /अलाभः
(च) सक्रियः – निष्क्रियः
(छ) असन्तुष्टः – सन्तुष्टः

(VIII) अधोलिखितपदेषु सन्धि–विच्छेदं कुरुत–

(क) शरीरयात्रापि – शरीरयात्रा + अपि
(ख) पुरुषोऽश्नुते – पुरुषः + अश्नुते
(ग) कर्मणैव – कर्मणा + एव
(घ) कृत्वापि – कृत्वा + अपि
(ङ.) लोकस्तदनुवर्तते – लोकः+तत्+अनुवर्तते।

(IX) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां विभक्तिं लिखत।

(क) योगः कर्मसु कौशलम् । (सप्तमी)
(ख) कर्मणा एव जनकादयः संसिद्धिम् आस्थिताः। (तृतीया)
(ग) कर्मणि एव अधिकारस्ते । (सप्तमी)
(घ) ततो युद्धाय युज्यस्व (चतुर्थी)
(ङ.) जीवने नियतं कर्म कुरू । द्वितीया)

(X) प्रदतमञ्जूषायाः समुचितपदानां चयनं कृत्वा अधोदत्तपदानां समानार्थकपदानि लिखन्तु –

मञ्जूषा – मतिः, दुष्कर्म, मनीषी, देहः, अनारतम्

(क) विद्वान् – मनीषी
(ख) शरीरम् – देहः
(ग) बुद्धिः – मतिः
(घ) सततम् – अनारतम्
(ङ) दुष्कृतम् – दुष्कर्म

धातु– प्रत्ययः

1. प्रकृतिप्रत्ययस्य संयोगं कुरुत :–

क. अहं गीतां पठ् + क्त्वा भोजनं करोमि ।
उत्तर– पठित्वा

ख छात्राः ! पठ् + तुमुन् आगच्छन्तु
उत्तर– पठितुम्

ग अस्माभिः . . . . (पठ् + तव्यत्)
उत्तर– पठितव्यः

घ. सर्वदा सत्यम् . . . . (वद् + अनीयर)
उत्तर– वदनीयम्

ङ भारतीय . . . . शिक्षिता अस्ति (जन + तल्)
उत्तर– जनता

अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखांकित पदानां प्रकृति–प्रत्ययौ संयोज्य वियोज्य वा प्रदतविकल्पेभ्यः चित्वा लिखत :–

1. सर्वे परिश्रमस्य महत्वं स्वीकुर्वन्ति।
   क महा + त्व ख महत् + त्व
   ग. मह + त्व घ. महा + त्वम

उत्तर– ख महत् + त्व

2. सर्वे कथां श्रु + क्त्वा आगच्छन्ति।
   क श्रोत्वा ख श्रृत्वा
   ग श्रुत्वा घ श्रौत्वा

उत्तर– ग श्रुत्वा

3. प्रवचनं प्रतिदिनं श्रु + तव्यत्।
   क श्रोतव्यम् ख श्रुतव्यम
   ग श्रोतव्यः घ श्रोतव्या

उत्तर– क श्रोतव्यम्

4. अस्माभिः तीर्थस्थलं दृश् + अनीयर।
   क दर्शनीय ख दर्शनीयम्
   ग दर्शनीया घ दर्शनीयानि्

उत्तर– ख दर्शनीयम्

5. सुरेशः लेखम् लिख् + क्त्वा विद्यालयं गच्छति।
   क लिखित्वा ख लेखीत्वा
   ग लेखित्वा घ लौखित्वा

उत्तर– क लिखित्वा

6. मित्र! कथां श्रु + तुमुन् चल।
   क श्रुतुम ख श्रोतुम्
   ग श्रातुम घ श्रुतुमुन

उत्तर– ख श्रोतुम्

7. तस्याः सुन्दर + तल् दर्शनीया।
   क सोदर्यम ख सौन्दर्यः
   ग सुन्दरम् घ सुन्दरता

उत्तर– घ सुन्दरता

8. सर्वे स्वकार्यः कर्तव्यम् ।
   क कृ + तव्यत् ख कृ + क्त्
   ग कृ + क्त्वा घ कृ +ल्यप्

उत्तर– क कृ + तव्यत्

Jharkhandlab.com

अधोलिखितेषु पदेषु (शब्देषु) कः प्रत्ययः इति लिखत–

क हसित्वा	ख मित्रता
उत्तर–क्त्वा	उत्तर–तल्
ग आगम्य	घ लिखित्वा
उत्तर – ल्यप्	उत्तर –क्त्वा
ङ सुन्दरता	च द्रष्टुम्
उत्तर – तल्	उत्तर – तुमुन्
छ पूजनीया	ज कर्तव्य
उत्तर – अनीयर्	उत्तर – तव्यत्
झ महत्व	ञ हनुमान्
उत्तर – त्व	उत्तर – मतुप्
ट दृष्टः	ठ खादितः
उत्तर – क्त	उत्तर – क्त
ड विहस्य	ढ भगवान्
उत्तर – ल्यप्	उत्तर – मतुप्
ण विहाय	त श्रीमान्
उत्तर – ल्यप्	उत्तर – मतुप्

अधोलिखितेषु शब्देषु धातु–प्रत्ययः विभज्य लिखत–

क.	पठित्वा	–	पठ्+क्त्वा
ख.	गन्तुम्	–	गम्+तुमुन्
ग.	आगम्य	–	आ+गम्+ल्यप्
घ.	लघुत्वम्	–	लघु+त्व
ङ	हनुमान्	–	हनु+मतुप्
च	आदाय	–	आ+दा+ल्यप्
छ	नीतः	–	नी+क्त
ज	आनीय	–	आ+नी+ल्यप्
झ	सुन्दरता	–	सुन्दर+तल्
ञ	बलवान्	–	बल+मतुप्
ट	पठितव्यम्	–	पठ्+तव्यत्
ठ	दर्शनीयम्	–	दृश्+अनीयर्
ड	महत्वम्	–	महत्+त्व
ढ	दातुम्	–	दा+तुमुन्
ण	श्रीमान्	–	श्री+मतुप्
त	गुणवान्	–	गुण+मतुप्
थ	शयितुम्	–	शी+तुमुन्
द	नेतुम्	–	नी+तुमुन्
ध	करणीयः	–	कृ+अनीयर्
न	स्मरणीयः	–	स्मृ+अनीयर्

सन्धि –विच्छेदः

1. सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरूत–

क.	देवालयः	–	देव+आलयः
ख.	परमानन्दः	–	परम+आनन्दः
ग.	दयानन्दः	–	दया+आनन्दः
घ.	महाशयः	–	महा+आशय
ङ.	रवीन्द्रः	–	रवि+इन्द्रः
च.	गुरूपदेशः	–	गुरू+उपदेशः
छ.	नरेन्द्रः	–	नर+इन्द्रः
ज.	रमेशः	–	रमा+ईशः
झ.	सूर्योदयः	–	सूर्य+उदयः
ञ.	देवर्षिः	–	देव+ऋषिः
ट.	वर्षर्तुः	–	वर्षा+ऋतुः
ठ.	यद्यपि	–	यदि+अपि
ड.	प्रत्येकम्	–	प्रति+एकम्
ढ.	स्वागतम्	–	सु+आगतम्
ण.	नायकः	–	नै+अकः
त.	विष्णोऽत्र	–	विष्णोः+अत्र
थ.	वागीशः	–	वाक्+ईशः
द.	नमस्ते	–	नमः+ते
ध.	पुरस्कार	–	पुरः+कारः
न.	मनोरथः	–	मनः+रथः
प.	सदाचारः	–	सत् + आचारः
फ.	निश्चलः	–	निः+चलः
ब.	तपोवनम्ः	–	तपः+वनम्
भ.	सम्मानम्	–	सम्+मानम्
म.	हरीशः	–	हरि+ईशः

रेखांकितपदस्य सन्धिं विच्छेदं वा विकल्पेभ्यः चीयताम्।

(1) <u>हिमालयः</u> भारतस्य उत्तरदिशायां तिष्ठति :–

क. हिम + आलयः ख. हिम + अलयः
ग. हिमा + आलयः घ. हिमा + अलयः

उत्तर –क. हिम + आलयः

(2) <u>हित+उपदेशः</u> नारायणपण्डितस्यःकृतिः ।

क हितोपदेश : ख हितापदेश :
ग हितपोदेश : घ हितुपदेश :

उत्तर – क हितोपदेशः

(3) त्वं <u>तथैव</u> कार्यं कुरूः ।

क. तथ + एव ख. तथा + एव
ग. तथा + ऐव घ. तथा + ऐव

उत्तर –ख तथा + एव

(4) <u>नरेशः</u> प्रजां रक्षति ।

क. नर + ईशः ख. नर + इशः
ग. नरे + ईशः घ. नरे + एशः

Jharkhandlab.com

उत्तर – क. नर + ईशः

(5) अहङ्कारः न करणीयः ।

क. अहंक + कारः ख. अहंङ + कारः

ग. अहंन + कारः घ. अहम् + कारः

उत्तर – घ. अहम् + कारः

(6) कपिः इतस्ततः भ्रमतिः ।

क. इत + ततः ख. इतस् + ततः

ग. इतः + ततः घ. इतर् + ततः

उत्तर – ग इतः + ततः

(7) जगदीशः सर्वत्र एव ।

क. जगत् + ईशः ख. जगद् + ईश

ग. जग + दीश घ. जगद + ईश

उत्तर – क जगत् + ईशः

(8) मम जनकस्तु प्रतिदिनम् अस्य पांठ करोति ।

क. जनकः + तु ख. जनकः + अस्त

ग. जनक + अस्तु घ. जनकम + तु

उत्तर – क. जनकः + तु

(9) मधु+अरिः इत्यस्य सन्धिपदं निर्णेयम्–

क. मध्वरिः ख. माधुरि :

ग. मध्वारिः घ. मधारि :

उत्तर – क. मध्वरिः

Jharkhandlab.com

पञ्चमः पाठः शुकनासोपदेशः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) शुकनासः कम् उपदिशति?
उत्तर- चन्द्रापीडम्

(ख) शुकनासः कस्य अमात्यः आसीत् ?
उत्तर- तारापीडस्य

(ग) चन्द्रापीडः कस्य पुत्रः आसीत्?
उत्तर- तारापीडस्य

(घ) 'शुकनासोपदेशः' पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः?
उत्तर- कादम्बर्याः

(ङ) 'शुकनासोपदेशः' कस्य रचना ?
उत्तर- बाणभट्टस्य

(च) शुकनासः चन्द्रापीडम् कदा उपदिशति?
उत्तर- राज्याभिषेकपूर्वम्

(छ) अजलं स्नानम् किम् ?
उत्तर- गुरूपदेशम्

(ज) शुकनासानुसारेण अनर्थपरम्परायाःकति कारणानि भवन्ति?
उत्तर- चत्वारि

(झ) चन्द्रापीडस्य पिता कः आसीत् ?
उत्तर- चन्द्रापीडस्य पिता तारापीडः आसीत्।

(ञ) कस्मिन् भावे चन्द्रापीडं शुकनासः उपदिशति?
उत्तर- वात्सल्यभावे चन्द्रापीडं शुकनासः उपदिशति

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं दीयताम् -

(क) लक्ष्मीमदः कीदृशः ?
उत्तर- लक्ष्मीमदः अपरिणामोपसमो दारुणो भवति।

(ख) चन्द्रापीडं कः उपदिशति?
उत्तर- चन्द्रापीडं शुकनासः उपदिशति।

(ग) अनर्थपरम्परायाः किं कारणम्?
उत्तर- अनर्थपरम्परायाः कारणम्-गर्भेश्वरत्वम्,अभिनवयौवनत्वम्,अप्रतिमरूपत्वम्, अमानुषशक्तित्वम् च।

(घ) कीदृशे मनसि उपदेशगुणाः प्रविशन्ति ?
उत्तर- अपगतमले मनसि उपदेशगुणाः प्रविशन्ति।

(ङ) लब्धापि दुःखेन का परिपाल्यते?
उत्तर- लब्धापि दुःखेन लक्ष्मीः परिपाल्यते।

(च) केषाम् उपदेष्टारः विरलाः सन्ति ?
उत्तर- राज्ञाम् उपदेष्टारः विरलाः सन्ति।

(छ) लक्ष्म्या परिगृहीताः राजानः कीदृशाः भवन्ति?
उत्तर- लक्ष्म्या परिगृहीताः राजानः विक्लवाः (दुःखिताः) भवन्ति।

(ज) वृद्धोपदेशं ते राजानः किमिति पश्यन्ति?
उत्तर- वृद्धोपदेशं ते राजानः जरा वैक्लव्यप्रलपितम् इति पश्यन्ति।

3. विशेषणानि विशेष्यैः सह योजयत-

	विशेषणम्	विशेष्यम्
(क)	समतिक्रामत्सु	ते
(ख)	अधीतशास्त्रस्य	विद्वांसम्
(ग)	दारुणो	दिवसेषु
(घ)	गहनं तमः	दोषजातम्
(ङ)	अतिमलिनम्	लक्ष्मीमदः
(च)	सचेतसम्	यौवनप्रभवम्

उत्तराणि-

(क)	समतिक्रामत्सु	दिवसेषु
(ख)	अधीतशास्त्रस्य	ते
(ग)	दारुणो	लक्ष्मीमदः
(घ)	गहनं तमः	यौवनप्रभवम्
(ङ)	अतिमलिनम्	दोषजातम्
(च)	सचेतसम्	विद्वांसम्

4. अधोलिखितानां पदानां सन्धिविच्छेदं कुरुत-

(क)	एवातिगहनम्	एव+ अतिगहनम्
(ख)	गर्भेश्वरत्वम्	गर्भ+ ईश्वरत्वम्
(ग)	गुरूपदेशः	गुरु + उपदेशः
(घ)	ह्येवम्	हि+ एवम्
(ङ)	नाभिजनम्	न+ अभिजनम्
(च)	नोपसर्पति	न+ उपसर्पति
(छ)	यथेयम्	यथा+ इयम्
(ज)	पुनरपिधीयसे	पुनः + अपिधीयसे
(झ)	दुःस्वप्नमिव	दुःस्वप्नम्+ इव
(ञ)	ताभिरुपदेशवाग्भिः	ताभिः+उपदेशवाग्भिः
(ट)	वृद्धोपदेशम्	वृद्ध+उपदेशम्

5. समासविग्रहं कुरुत -

(क)	अमानुषशक्तित्वम्	- न मानुषः तस्य शक्तित्वम्
(ख)	अत्यासङ्गः	- आसङ्गम् अतिक्रान्तः
(ग)	अनार्या	- न आर्या
(घ)	स्वार्थनिष्पादनपरैः	- स्वार्थस्य निष्पादने परैः
(ङ)	अहर्निशम्	- अहश्च निशा च
(च)	वृद्धोपदेशम्	- वृद्धानाम् उपदेशम्

6. रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) लक्ष्मी..........न रक्षति ।
-लक्ष्मी.....परिचयं.....न रक्षति।

(ख) .... दुःस्वप्नमिव न स्मरति ।
-....दातारं ....दुःस्वप्नमिव न स्मरति।

Jharkhandlab.com

(ग) **सरस्वतीपरिगृहीतं............।**

\- सरस्वतीपरिगृहीतं....नालिङ्गतिजनम्.....।

(घ) **उपदिश्यमानमपि ....न शृणवन्ति।**

\- उपदिश्यमानमपि....ते....न शृणवन्ति।

(ङ) **अवधीरयन्तः .... हितोपदेशदायिनो गुरून्।**

\- अवधीरयन्तः....खेदयन्ति....हितोपदेशदायिनो गुरून्।

(च) **तथा प्रयतेथाः .... नोपहस्यसे जनैः।**

\- तथा प्रयतेथाः....यथा....नोपहस्यसे जनैः।

(छ) **चन्द्रापीडः प्रीतहृदयो ....आजगाम्।**

\- चन्द्रापीडः प्रीतहृदयो....स्वभवनम् ...आजगाम्।

7. गद्यांशं पठित्वा विकल्पेभ्यः समीचिनोत्तरं चिनुत-

गद्यांश-1

भवादृशा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि विशन्ति सुखेनोपदेशगुणाः।हरति अतिमलिनमपि दोषजातं गुरूपदेशः गुरूपदेशश्च नाम अखिलमप्रक्षालनम् अजलं स्नानम्। विशेषेण तु राज्ञाम्। विरला हि तेषामुपदेष्टारः। राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्।

(क) गुरूपदेशः कीदृशं दोषजातं हरति?
(i) अतिमलिनम् (ii) पितृदोषम्
(iii) हत्यादोषम् (iv) पुनरुक्तिदोषम्

(ख) जनः केन भावेन राजवचनमनुगच्छति ?
(i) सद्भावेन (ii) दुर्भावेन
(iii) भयेन/ भयात् (iv) तापेश

(ग) अजलं स्नानम् किम्?
(i) गंगा स्नानम् (ii) सङ्ममस्नानम्
(iii) समुद्रस्नानम् (iv) गुरूपदेशः

(ग) दुःखेन इति पदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(i) अपगतमले (ii) सुखेन
(iii) गुरूपदेशः (iv) राज्ञाम्

(घ) हरति इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् ?
(i) राज्ञाम् (ii) गुरूपदेशः
(iii) भवादृशा (iv) विरला

(ङ) पात्राणि इति पदस्य किं समानार्थकम् अत्र प्रयुक्तम्?
(i) गुरूपदेशः (ii) भवादृशा
(iii) राज्ञाम् **(iv) भाजनानि**

उत्तराणि

(क)(i) अतिमलिनम्
(ख) (iii) भयेन/ भयात्
(ग) (ii) सुखेन
(घ) (ii) गुरूपदेशः
(ङ) (iv) भाजनानि

गद्यांश-2

एवं समतिक्रामत्सु दिवसेषु राजा चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः प्रतिहारानुपकरण-सम्भारसंङ्ग्रहार्थमादिदेश। समुपस्थितयौवराज्याभिषेकं च तं कदाचिद् दर्शनार्थमागतमारूढविनयमपि विनीततरमिच्छन् कर्तुं शुकनासः सविस्तरमुवाच-" तात! चन्द्रापीड! विदितवेदितव्यस्याधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। केवलं च निसर्गत एवातिगहनं तमो यौवनप्रभवम्।अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।

(क) यौवनप्रभवम् मदः कीदृशं भवति?
(i) अतिसुंदरम् (ii) अतिगहनम्
(iii) अतिप्रियम् (iv) सुसज्जितः

(ख) राजा कस्य यौवराज्याभिषेकं कर्तुम् इच्छति स्म?
(i) तारापीडस्य (ii) शुकनासस्य
(iii) वैशम्पायनस्य (iv) चन्द्रापीडस्य

(ग) चन्द्रापीडः कस्य समीपे दर्शनार्थं गच्छति?
(i) तारापीडस्य (ii) वैशम्पायनस्य
(iii) शुकनासस्य (iv) प्रतिहारस्य

(घ) दारूणः इति पदं कस्य विशेषणम् ?
(i) तारापीडस्य (ii) लक्ष्मीमदः
(iii) तारापीडस्य (iv) चन्द्रापीडस्य

(ङ) स्वभावतः इति पदस्य कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तः ?
(i) निसर्गतः (ii) राजा
(iii) तात (iv) प्रतिहारः

उत्तराणि

(ii) अतिगहनम्
(iv) चन्द्रापीडस्य
(iii) शुकनासस्य
(ii) लक्ष्मीमदः
(i) निसर्गतः

Jharkhandlab.com

षष्ठ : पाठः सूक्तिसुधा

jharkhandlab.com

अद्योदतं पद्यांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानामुतराणि यथानिर्देशं लिखत–

(अ) मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा–
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून् पर्वती कृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।

1 एकपदेन उत्तरत –

(i) सन्तः मनसि वचसि काये च कीदृशाः भवन्ति ?

उत्तर – पुण्यपीयूषपूर्णाः

(ii) सन्तः किम् उपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्ति ?

उत्तर – त्रिभुवनम्

2 पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) सन्तः परगुणपरमाणून् कथं निजहृदि विकसन्ति ?

उत्तर – सन्तः परगुणपरमाणून् अपि पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्ति ।

3 प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चित्वा लिखत –

(i) प्रीणयन्तः इति विशेषणस्य विशेष्यपदं किम् ?

(अ) कियन्तः (ब) सन्तः
(स) परगुणं (द) नित्यम्

उत्तर (ब) सन्तः

(ii) 'सन्ति' इति क्रियापदस्य श्लोके कर्तृपदं किम् ?

(अ) विकसन्तः (ब) प्रीणयन्तः
(स) पूर्णाः (द) सन्तः

उत्तर– (द) सन्तः

(iii) निजहृदि.........।' इत्यस्मिन् वाक्ये सर्वनामपदं किम्?

(अ) कियन्तः (ब) सन्तः
(स) विकसन्तः (द) सन्ति

उत्तर (अ) कियन्तः

(iv) 'अमृतम्' इत्यर्थे अत्र कः पर्यायः ?

(अ) कायः (ब) पुण्यः
(स) पीयूषः (द) परमाणुः

उत्तर– (स) पीयूषः

(आ) सहसाविदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।। 6।।

(क) एकपदेन उत्तरत

(i) सहसा का न करणीया ?

उत्तर – क्रिया

(ii) परमापदां पदं किम्?

उत्तर अविवेकः

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) गुणलुब्धाः सम्पदः कं स्वयमेव वृणुते?

उत्तर – गुणलुब्धाः सम्पदः विमृश्यकारिणं स्वयमेव वृणुते ।

(ग) प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चित्वा लिखत –

(i) 'सम्पदः' इति विशेष्यपदस्य श्लोके विशेषणपदं किम्?

(अ) विमृश्यकारिणं (ब) गुणलुब्धाः
(स) परमा (द) सहसा

उत्तर– (ब) गुणलुब्धाः

(ii) 'वृणुते' इति क्रियापदस्य अत्र कर्तृपदं किम्?

(अ) सम्पदः (ब) अविवेकः
(स) अपदाम् (द) क्रिया

उत्तर– (अ) अविवेकः

(iii) 'विवेकः इति पदस्य' विलोमपदं किम् ?

(अ) सहसा (ब) विमृश्य
(स) अविवेकः (द) परमम्

उत्तर (स) अविवेकः

(iv) 'कर्तव्यम्' इत्यर्थे श्लोके कः पर्यायः?

(अ) कारिणम (ब) विद्धीत्
(स) वृणते (द) पदम

उत्तर–(ब) विद्धीत्

(इ) नीरक्षीर विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत् ।
विश्वस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः ।।2।।

प्रश्नाः

(क) एकपदेन उत्तरत–

(i) नीरक्षीर विवेके कः चतुरः भवति ?

उत्तर – हंसः

(ii) हंसः कस्मिन् आलस्यं करोति ?

उत्तर– नीरक्षीरविवेके

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) हंसस्य कुलव्रतं किमस्ति?

उत्तर – नीरक्षीरविवेकें हंसस्य कुलव्रतमस्ति।

(ग) प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चित्वा लिखत–

(i) 'नीरक्षीर' इति विशेषणस्य विशेष्यपदं किम्?

(अ) हंसः (ब) आलस्य

(स) विवेके (द) चेत्

उत्तर (स) विवेके

(ii) 'तनुषे' इति क्रियायाः कर्तृपदं किमस्ति?

(अ) चेत (ब) त्वम्

(स) नीर (द) आलस्य

उत्तर– (ब) त्वम्

(iii) अस्मिन् श्लोके 'त्वम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(अ) नीराय (ब) क्षीराय

(स) अन्यजनाय (द) हंसाय

उत्तर (द) हंसाय

(iv) 'दुग्धम्' इत्यर्थे अत्र कः पर्यायः?

(अ) क्षीरम् (ब) नीरम्

(स) पयः (द) विवेकं

उत्तर–(अ) क्षीरम्

संस्कृतभाषया प्रश्नोत्तराणि लिखत–

(क) सर्वत्र कीदृशं नीरम् अस्ति ?

उत्तर – नीरजराजितम्

(ख) मरालस्य मानसं कं विना न रमते?

उत्तर– मानसरोवरं

(ग) विद्वान् कम् अपेक्षते ?

उत्तर– भाग्यपौरुषञ्च

(घ) सहसा किं न विदधीत?

उत्तर– क्रियाम्

(ड.) अपण्डितानां विभूषणं किम्?

उत्तर – मौनम्

(च) पापात् कः निवारयति?

उत्तर– सन्मित्रम्

(छ) सन्तः कान् पर्वतीकुर्वन्ति?

उत्तर– परगुणपरमाणून्

(ज) कीदृशं भूषणं न क्षीयते ?

उत्तर– वाग्भूषणम्

निम्नलिखितपदानां पाठात् विलोमपदं चित्वा लिखत –

(क) मूर्खः –

(ख) अप्रियः –

(ग) पुण्यात् –

(ध) यौवनम् –

(ङ) उपेक्षते –

उत्तर–(क) विद्वान्

(ख) प्रियः

(ग) पापात्

(ध) जरा

(ङ) अपेक्षते

अधोलिखितशब्दानां पाठात् पर्यायपदं चित्वा लिखत

(क) मरालस्य

(ख) अधुना

(ग) नीरजं

(घ) रसालः

(ड.) अवलम्बते

उत्तर–(क) हंसस्य

(ख) साम्प्रतम्

(ग) कमलम्

(घ) आम्रम्

(ड.) आश्रयते

सन्धिविच्छेदं क्रियताम् –

(क) नालम्बते –

(ख) चन्द्रोज्ज्वलाः –

(ग) पापान्निवारयति –

(घ) तावदेव –

(ड.) संस्कृता –

उत्तर–(क) न + आलम्बते

(ख) चन्द्र + उज्ज्वलाः

(ग) पापात् +निवारयति

(घ) तावत् + एव

(ड.) सम् + कृता

jharkhandlab.com

अधोलिखितशब्दानां समासविग्रहः च समस्तपदानि रचयत।

(क) कुलस्य व्रतं –

(ख) वाग्भूषणम् –

(ग) गुणानां लुब्धाः –

(घ) चन्द्रोज्ज्वलाः –

(ङ.) अप्रतिहता –

उत्तर–(क) कुलव्रतम्

(ख) वाक् एव भूषणम्

(ग) गुणलुब्धाः

(घ) चन्द्र इव उज्ज्वलाः

(ङ.) न प्रतिहता

अधोलिखितशब्देषु प्रकृतिप्रत्ययानां विभागः करणीय –

(क) दैष्टिकतां

(ख) कुर्वाणः

(ग) पटुता

(घ) सिद्धम्

(ङ.) विमृश्य

उत्तर–(क) दैष्टिक + तल्

(ख) कृ + शानच्

(ग) पटु + तल्

(घ) सिद्ध+ क्त

(ङ.) वि+ मृश् + ल्यप्

प्रश्नाः

एकपदेन उत्तरत–

क. सन्तः कान् पर्वतीकुर्वन्ति?

उत्तरम – परगुणपरमाणून् ।

ख. सन्तः उपकारं श्रेणिभिः कं प्रीणयन्ति?

उत्तरम – त्रिभुवनम्

पूर्णवाक्येन उत्तरत–

क. सज्जनानां मनः वचः कायश्च केन पूर्णः भवति?

उत्तरम– सज्जनानां मनः वचः कायश्च पुण्यपीयूषेण पूर्णः भवति ।

ख. सज्जनाः परोपकारान् कुत्र विकसन्ति?

उत्तरम – सज्जनाः परोपकारान् निजहृदि विकसन्ति।

Jharkhandlab.com

सप्तमः पाठः	विक्रमस्यौदार्यम्”

1. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) **विक्रमस्यौदार्यं पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः?**

(ख) **उपार्जितानां वित्तानां रक्षणं कथं भवति?**

(ग) **धनविषये कीदृशः व्यवहारः कर्तव्यः?**

(घ) **जलमध्ये पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा क्षणं कः स्थितः?**

(ङ) **समुद्रः राज्ञे किमर्थं रत्नचतुष्टयं दत्तवान्?**

(च) **द्वितीयरत्नेन किम् उत्पद्यते?**

(छ) **प्रीतिलक्षणम् कतिविधं भवति?**

2. **रिक्तस्थानानि पूरयत -**

(क) **उपार्जितानां वित्तानां .... हि रक्षणम्।**

(ख) **दातव्यं भोक्तव्यं धनविषये .... न कर्तव्यः ।**

(ग) **ततः शिल्पिभिरतीव .... मण्डपः कारितः।**

(घ) **भो समुद्र!................. यज्ञं करोति।**

(ङ) **तस्मै राज्ञे व्ययार्थं .... दास्यामि।**

(च) **यद्रत्नं चतुरङ्गबलं .... तद् ग्रहीष्यामः ।**

(छ) **सर्वेषां प्राणिनामनेनैव .... भवति ।**

3. **अधोलिखितानां पदानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत -**
वित्तानाम्, शिल्पिभिः, गिरौ, एतेषाम्, दातव्यम्, रोचते।

4. **प्रकृतिप्रत्ययविभागः क्रियताम् -**
उपक्रान्तवान्, विधाय, गत्वा, गृहीत्वा, स्थितः, व्यतिक्रम्य, दातव्यम्।

5. **सन्धिच्छेदं कुरुत -**
तेनैव, यच्चोक्तम्, तस्येप्सितम्, चैव, यच्च, तदपि, सर्वापि, सोऽपि, प्राप्तैव, चेदस्मिन्, तच्छ्रुत्वा, त्वय्येवम् ।

6. **सप्रसङ्गं हिन्दीभाषया व्याख्या कार्या -**

(क) **उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम्।**
तटाकोदरसंस्थानां परीवाह इवाम्भसाम्।।

(ख) **ददाति प्रतिगृह्णाति गृह् यमाख्याति पृच्छति।**
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्।।

7. **अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत -**
विक्रमतुल्यम्, क्रियाविधिज्ञम्, सकलगुणनिवासः, यज्ञसामग्री, समुद्रतीरम्, जलमध्ये, पुष्पाञ्जलिम्, देदीप्यमानशरीरः, यज्ञार्थम्, यज्ञसमाप्तिः, गुणकथनम्, ब्राह्मणसमूहः, प्राणधारणम्, राजसमीपम्।

उत्तराणि

1. पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(क) विक्रमस्यौदार्यं पाठः 'सिंहासनद्वात्रिंशिका' इति ग्रन्थात् सङ्कलितः।

(ख) उपार्जितानां वित्तानां रक्षणं त्यागेन भवति।

(ग) धनविषये दानभोगैः व्यवहारः कर्तव्यः ।

(घ) जलमध्ये पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा क्षणं ब्राह्मणः स्थितः।

(ङ) समुद्रः राज्ञे व्ययार्थं रत्नचतुष्टयं दत्तवान्।

(च) द्वितीयरत्नेन अमृततुल्यं भोजनादिकम् उत्पद्यते।

(छ) प्रीतिलक्षणं षड्विधं भवति।

2. **रिक्तस्थानानि पूरयत -**

(क) उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम्।

(ख) दातव्यं भोक्तव्यं धनविषये सञ्चयः न कर्तव्यः।

(ग) ततः शिल्पिभिरतीव मनोहरो मण्डपः कारितः।

(घ) भो समुद्र! विक्रमार्कः राजा यज्ञं करोति।

(ङ) तस्मै राज्ञे व्ययार्थं रत्नचतुष्टयं दास्यामि।

(च) यद्रत्नं चतुरङ्गबलं ददाति तद् ग्रहीष्यामः।

(छ) सर्वेषां प्राणिनामनेनैव प्राणधारणं भवति।

3. **अधोलिखितानां पदानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत -**
वित्तानाम्, शिल्पिभिः, गिरौ, एतेषाम्, दातव्यम्, रोचते।

(क) वित्तानाम्- वित्तानां दानभोगैः रक्षणं कर्तव्यम्।

(ख) शिल्पिभिः- शिल्पिभिः मनोहरः मण्डपः कृतः।

(ग) गिरौ- गिरौ मयूरः नृत्यति।।

(घ) एतेषाम्- एतेषां याचना अवश्यं पूरणीया।

(ङ) दातव्यम्- यत् यस्मै रोचते तत् तस्मै दातव्यम्।

(च) रोचते- मह्यं संस्कृतं रोचते।

4. **प्रकृतिप्रत्ययविभागः क्रियताम् -**
उपक्रान्तवान्, विधाय, गत्वा, गृहीत्वा, स्थितः, व्यतिक्रम्य, दातव्यम्।

उपसर्ग + प्रकृति + प्रत्यय

(क) उपक्रान्तवान् - उप + √क्रिम् + क्तवतु (पुं०, प्रथमा एकवचनम्)

(ख) विधाय - वि + √धा + ल्यप् (अव्ययपदम्)

(ग) गत्वा - √गम् + क्त्वा (अव्ययपदम्)

(घ) गृहीत्वा -√ग्रह् + क्त्वा (अव्ययपदम्)

(ङ) स्थितः - स्था + क्त (पुं०, प्रथमा एकवचनम्)

(च) व्यतिक्रम्य - वि + अति + क्रिम् + ल्यप् (अव्ययपदम्)

5. **सन्धिच्छेदं कुरुत -**
तेनैव, यच्चोक्तम्, तस्येप्सितम्, चैव, यच्च, तदपि, सर्वापि, सोऽपि, प्राप्तैव, चेदस्मिन्, तच्छ्रुत्वा, त्वय्येवम् ।

(क) तेनैव = तेन + एव

(ख) यच्चोक्तम् = यत् + च + उक्तम्

Jharkhandlab.com

(ग) तस्येप्सितम् = तस्य + इप्सितम्

(घ) चैव = च + एव

(ङ) यच्च = यत् + च

(च) तदपि = तत् + अपि

(छ) सर्वापि = सर्वा + अपि

(ज) सोऽपि = सः + अपि

(झ) प्राप्तैव = प्राप्ता + एव

(ञ) चेदस्मिन् = चेद् + अस्मिन्

(ट) तच्छ्रुत्वा = तत् + श्रुत्वा

(ठ) त्वय्येवम् = त्वयि + एवम्

6. **सप्रसङ्गं हिन्दीभाषया व्याख्या कार्या -**

(क) उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम्।
तटाकोदरसंस्थानां परीवाह इवाम्भसाम्।।

प्रसंगः-प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्यपुस्तक शाश्वती द्वितीयो भागः के विक्रमस्यौदार्यं नामक पाठ से लिया गया है। यह कथा किसी अज्ञात लेखक द्वारा रचित 'सिंहासनद्वात्रिंशिका' कथा संग्रह से संकलित है। प्रस्तुत पद्य में धन के दान को ही धन का सच्चा संरक्षण कहा गया है।

व्याख्या - मनुष्य अपने परिश्रम से जो भी धनार्जन करता है, उसका संरक्षण खजाना भरकर नहीं बल्कि असहायों की सहायता के लिए उस धन को दान करके ही किया जा सकता है। देना ही उसकी सच्ची रक्षा है। जिस तालाब के जल को कभी काम में नहीं लाया जाता वह तालाब में पड़े-पड़े सड़कर दुर्गन्धयुक्त हो जाता है, इसीलिए तालाब के जल को बाहर निकाल दिया जाता है ताकि नया जल आ सके और जल की उपयोगिता बनी रहे। इसी प्रकार धन का दान करना ही धन का सच्चा उपयोग है।

(ख) ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्।।

प्रसंगः - प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्यपुस्तक शाश्वती द्वितीयो भागः के 'विक्रमौदस्यौदार्यम्' नामक पाठ से लिया गया है। यह कथा किसी अज्ञात लेखक द्वारा रचित 'सिंहासनद्वात्रिंशिका' कथासंग्रह से संकलित है। प्रस्तुत पद्य में समुद्र के द्वारा ब्राह्मण को मित्रता का लक्षण बताया गया है।

व्याख्या - सच्ची मित्रता की पहचान के छह सूत्र हैं -

1. मित्र, मित्र को धन आदि प्रदान करता है।
2. मित्र, मित्र से धन आदि स्वीकार करता है।
3. अपनी गोपनीय (छिपाने योग्य) बात मित्र को बताता है।
4. मित्र की गोपनीय बात उससे पूछता है।
5. मित्र के साथ बैठकर भोजन करता है।
6. मित्र को भोजन खिलाता है।

जिन दो मित्रों के बीच उक्त छः प्रकार के आचरण बिना किसी औपचारिकता के सम्पन्न होते हैं उन्हीं में सच्ची मित्रता समझनी चाहिए।

7. **अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत -**

विक्रमतुल्यम्, क्रियाविधिज्ञम्, सकलगुणनिवासः, यज्ञसामग्री, समुद्रतीरम्, जलमध्ये, पुष्पाञ्जलिम्, देदीप्यमानशरीरः, यज्ञार्थम्, यज्ञसमाप्तिः, गुणकथनम्, ब्राह्मणसमूहः, प्राणधारणम्, राजसमीपम्।

विक्रमतुल्यम् - विक्रमेण तुल्यम् (तृतीया-तत्पुरुषः)

क्रियाविधिज्ञम् - क्रियायाः विधिं जानाति इति क्रियाविधिज्ञः तम् (उपपद-तत्पुरुषः)

सकलगुणनिवासः - सकलानां गुणानां निवासः (षष्ठी-तत्पुरुषः)

यज्ञसामग्री - यज्ञाय सामग्री (चतुर्थी-तत्पुरुषः)

समुद्रतीरम् - समुद्रस्य तीरम् (षष्ठी-तत्पुरुषः)

जलमध्ये - जलस्य मध्ये (षष्ठी-तत्पुरुषः)

पुष्पाञ्जलिम् - पुष्पाणाम् अञ्जलिम् (षष्ठी-तत्पुरुषः)

देदीप्यमानशरीरः - देदीप्यमानः शरीरः (कर्मधारयः)

यज्ञार्थम् - यज्ञाय अर्थम् (चतुर्थी-तत्पुरुषः)

यज्ञसमाप्तिः - यज्ञस्य समाप्तिः (षष्ठी-तत्पुरुषः)

गुणकथनम् - गुणस्य कथनम् (षष्ठी-तत्पुरुषः)

ब्राह्मणसमूहः - ब्राह्मणानां समूहः (षष्ठी-तत्पुरुषः)

प्राणधारणम् - प्राणानां धारणम् (षष्ठी-तत्पुरुषः)

राजसमीपम्-राज्ञः समीपम् (षष्ठी-तत्पुरुषः)

अतिरिक्तसम्भावितप्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) सिंहासने समुपवेष्टुं कः गच्छति?

(ख) राजा कां विक्रमादित्यस्य औदार्यं वर्णयितुं कथयति?

(ग 'अहो असारोऽयं संसारः' इति कस्य कथनमस्ति?

(घ) कस्मिन् विषये सञ्चयो न कर्तव्यः?

(ङ) मण्डपः कैः कारितः?

(च) समुद्राह्वानार्थं कः प्रेषितः?

(छ) समुद्रः कस्मै रत्नचतुष्टयं ददाति?

(ज) चतुर्थरत्नात् कानि जायन्ते?

(झ) 'यद्रत्नं चतुरङ्गबलं ददाति तद्ग्रहीष्यामः।' इतिकेनोक्तम्?

(ञ) बुद्धिमता किं न प्रार्थनीयम्?

(ट) केषां परस्परं विवादो लग्नः?

(ठ) राजा कस्मै चत्वार्यपि रत्नानि ददौ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) विक्रमस्य सिंहासनं केन अध्यासितव्यम्?

(ख) उपार्जितानां वितं कैः विना सफलं न भवति?

(ग) द्वितीयरत्नेन किम् उत्पद्यते?

(घ) सर्वेषां प्राणिनां केन प्राणधारणं भवति?

3. बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः-

1. **'याचकानाम्' इति पदस्य अत्र कः पर्यायः?**
   क. देवानाम् ख. अर्थिनाम्
   ग. भिक्षुकाणाम् घ. नृपणाम्

2. **सिंहासनद्वात्रिंशिकायां कति कथाः सन्ति ?**
   क. त्रिंशत् ख. द्वात्रिंशत्
   ग. विंशतिः घ. पञ्चाशत्

3. **पुत्तलिकाः कति सन्ति?**
   क. विंशतिः ख. सप्तदश
   ग. द्वात्रिंशत् घ. पञ्चविंशतिः

Jharkhandlab.com

4. **'मित्रस्य' इति पदस्थ अत्र कः विलोमः?**
क. सखा   ख. बन्धु
ग. सुहृद्   घ. शत्रुः

5. **'कथयति' इत्यर्थे अत्र कः पर्यायः?**
क. पृच्छति   ख. आख्याति
ग. ददाति   घ. गच्छति

6. **'वृत्तान्तम्' इति संज्ञापदस्य अत्र सर्वनामपदं किम्?**
क. तेषाम्   ख. सर्वम्
ग. यत्   घ. तत्

7. **प्रीतिलक्षणं कतिविधं भवति?**
क. एक   ख. षड्
ग. पञ्च   घ. सप्त

8. **'मौनम्' इत्यर्थे अत्र कः पर्यायः?**
क. श्रुत्वा   ख. औदार्यम्
ग. तूष्णीम्   घ. वृत्तान्तम्

अतिरिक्तसम्भावितप्रश्नाः - उत्तराणि

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) राजा
(ख) पुत्तलिकां
(ग) राज्ञः विक्रमस्य
(घ) धनविषये
(ङ) शिल्पिभिः
(च) ब्राह्मणः
(छ) राज्ञे
(ज) दिव्याभरणानि
(झ) पुत्रेण
(ञ) राज्यं
(ट) चतुर्णां
(ठ) ब्राह्मणाय

(2) पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) विक्रमस्य सिंहासनं तेनैव अध्यासितव्यं यस्य विक्रमतुल्यम् औदार्यमस्ति।
(ख) उपार्जितानां वित्तं दानभोगैः विना सफलं न भवति।
(ग) द्वितीयरत्नेन भोजनादिकममृततुल्यम् उत्पद्यते।
(घ) सर्वेषां प्राणिनां प्राणधारणं अन्नेन भवति।

3. **बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः-**

1. ग. भिक्षुकाणाम्
2. ख. द्वात्रिंशत्
3. ग. द्वात्रिंशत्
4. घ. शत्रुः
5. ख. आख्याति
6. ख. सर्वम्
7. ख. षड्
8. ग.तूष्णीम्

Jharkhandlab.com

अष्टम : पाठः	भू - विभागाः

Jharkhandlab.com

1.संस्कृतेन उत्तरं दीयताम् –

(क) पृथिव्याः कति भेदाः ?

उत्तर – सप्तभेदाः ।

(ख) पर्वताः कति सन्ति ?

उत्तर – सप्त ।

(ग) समुद्राः कति सन्ति ?

उत्तर – सप्त ।

(घ) 'अर्श' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

उत्तर – आकाशाय

(ङ) 'कुर्शी' इति पदं कस्मिन् अर्थे प्रयुक्तम् ?

उत्तर – स्वर्गभूम्यर्थे ।

(2) अधोलिखितानां पदानां सन्धि–विच्छेदं कुरूत –

क. समुद्रोऽपि – समुद्रः+अपि

ख. पुटान्युच्यन्ते – पुटानि+उच्यन्ते

ग. स्वर्गस्योपरि – स्वर्गस्य+उपरि

(3) अधोलिखितानां पदानां पर्यायवाचीपदानि लिखत –

क. पृथ्वी – भू ,भूमिः, धरा, वसुन्धरा, वसुधा

ख. पर्वतः – गिरिः, नगः, महीधरः, अचलः,

ग. समुद्रः – जलधि, सागरः, पयोनिधिः,

घ. गगनम् – आकाशः, नभः,

ङ. स्वर्गः – दिवम्, द्युलोकः, नाकम्

पठितावबोधनकार्यम्–

(4) अथ पृथ्वी निरूपणम् –पृथिव्याःसप्तभेदाः। ते च भेदाः सप्तपुटान्युच्यन्ते।

तानि च पुटानि–अतल– वितल –सुतल – तलातल –रसातल –पातालारव्यानि ।

अस्मन्मतेऽपि सप्तभेदाः । यथाऽस्मद्वेदे श्रूयते परमेश्वरो यथा सप्तगगनानि तद्वत् पृथिव्याः सप्तविभागान् कृतवान्।

उपर्युक्तं गद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उतराणि यथानिर्देशं लिखत –

क. एकपदेन उत्तरत –

(i) पृथिव्याः कति भेदाः सन्ति ?

उत्तर – सप्त

(ii) कः सप्तगगनानि कृतवान् ?

उत्तर –परमेश्वरः

ख. पूर्णवाक्येन उत्तरत –

(i) कानि सप्तपुटानि सन्ति ?

उत्तर (प) 'सप्तपुटानि' सन्ति– 'अतल– वितल – सुतल – तलातल–रसातल' महीतल–पातालाख्यानि ।

ग. प्रदतविकल्पेभ्यः उत्तरं चित्वा लिखत –

(i) 'गगनानि' इति विशेष्यपदस्य विशेषणं किम् ?

(अ.) यथा (ब.) सप्त

(स.) परम (द.) अस्मद

उत्तर– ब.) सप्त

(ii) 'तानि' इति सर्वनामपदस्य अत्र संज्ञापदं किम् ?

(अ.) भेदाः (ब.) गगनानि

(स.) आख्यानि (द.) पुटानि

उत्तर– (द.) पुटानि

(iii) 'कृतवान्' इति क्रियापदस्य अत्र कर्तृपदं किम् ?

(अ.) परमेश्वरः (ब.) पृथिव्याः

(स.) भेदाः (द.) तद्वत्

उत्तर– (अ.) परमेश्वरः

(iv) 'नामानि' इत्यर्थे अत्र कः पर्यायः ?

(अ.) पुटानि (ब.) गगनानि

(स.) आख्यानि (द.) विभागान्

उत्तर– (स.) आख्यानि

(5.) अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां विलोमार्थकपदानि लिखत –

(i) तान् '<u>स्वर्गः</u>' इति वदन्ति ?

उत्तर–नरकः

(ii) स्वर्गस्य मनः <u>आकाशं</u> जानाति ?

उत्तर– पातालम्

(iii) समुद्रेभ्यः <u>उपरि</u> तिष्ठन्ति?

उत्तर– अधः

(iv) सः <u>नरकः</u> इति वदन्ति ।

उत्तर– स्वर्गः

(v) भगवद्वाक्यानि समाप्तानि न भवन्ति ।

उत्तर– आरम्भाणि ।

(vi) भू–विभागाः इति पाठः 'कस्मात्' ग्रन्थात् सङ्कलितः, कश्चास्य लेखकः?

उत्तर–इति पाठःसमुद्रसंड़गमः इति ग्रन्थात् संड़कलितः। अस्य ग्रथस्य लेखकः दाराशिकोहःआसीत् ।

(कारक–उपपद–विभक्तिः)

अधोलिखितवाक्यानां समुचितविभक्तेः चयनकृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

(1) राकेशः.................. काणः अस्ति।

(क) नेत्रम (ख) नेत्रयोः

(ग) नेत्रात् (घ) नेत्रेण

उत्तर– (घ) नेत्रेण

(2) .... तापसः।

(क) जटया (ख) जटायाः

(ग) जटाभिः (घ) जटाम्

उत्तर– (ग) जटाभिः

(3) धनिकः................ भोजनं ददाति।

(क) भिक्षुकाय (ख) भिक्षुके

(ग) भिक्षुकम् (घ) भिनुकस्य

उत्तर – (क) भिक्षुकाय

(4) श्री .... नमः।

(क) गणेशम् (ख) गणेशाय

(ग) गणेशेन (घ) गणेशस्य

उत्तर (ख) गणेशाय

(5) ....मोदकं रोचते।

(क) बालकाय (ख) बालकम्

(ग) बालकान् (घ) बालकानाम्

उत्तर– (क) बालकाय

(6) .... स्पृहयति।

(क) पुष्पाणि (ख) पुष्पात्

(ग) पुष्पेषु (घ) पुष्पेभ्यः

उत्तर– (घ) पुष्पेभ्यः

(7) .... स्वस्ति।

(क) प्रजाम (ख) प्रजास्य

(ग) प्रजाभ्यः (घ) प्रजे

उत्तर– (ग) प्रजाभ्यः

(8) अलं ....।

(क) कोलोहल. (ख) कोलाहलम्

(ग) कोलाहलेन (घ) कोलाहलात्

उत्तर– (ग) कोलाहलेन

(9) रामः .... खञ्जः अस्ति।

(क) पादेन (ख) पादम्

(ग) पादस्य (घ) पादाय

उत्तर– (क) पादेन

(10) मिष्टान्नं............... रोचते।

(क) बालकम् (ख) बालकाय

(ग) बालकेन (घ) बालकस्य

उत्तर– (ख) बालकाय

(11) ....परितः वृक्षाः सन्ति ।

(क) ग्रामस्य (ख) ग्रामात्

(ग) ग्रामं (घ) ग्रामे

उत्तर. (ग) ग्रामं

(12) अहं................ लिखामि।

(क) पत्ते (ख) पत्राय

(ग) पत्रं (घ) पत्रस्य

उत्तर – (ग) पत्रं

(13) ग्रामं गच्छन् .... स्पृशति।

(क) तृणाय (ख) तृणे

(ग) तृणः (घ) तृणम्

उत्तर – (घ) तृणम्

(14) हरिः .... अधिशेते।

(क) वैकुण्ठम् (ख) वैकुण्ठे

(ग) वैकुण्ठि (घ) वैकुण्ठात्

उत्तर – (क) वैकुण्ठम्

(15) नृपः .... शतं दण्डयति

(क) चौरात (ख) चौरं

(ग) चौरस्य (घ) चौरे

उत्तर– (ख) चौरं

(16) उभयतः .... वृक्षाः सन्ति

(क) विद्यालयस्य (ख) विद्यालये

(ग) विद्यालयम् (घ) विद्यालयस्य

उत्तर– (ग) विद्यालयम्

Jharkhandlab.com

(17) .... निकषा मा गच्छ।

(क) दुर्जनस्य (ख) दुर्जनं

(ग) दुर्जनात् (घ) दुर्जने

उत्तर– (ख) दुर्जनं

(18) धिक् ....।

(क) पापिनम् (ख) पापिनाम

(ग) पापिने (घ) पापिन

उत्तर– (क) पापिनम्

(19) .... कुटिला नदी।

(क) क्रोशं (ख) क्रोशे

(ग) क्रोशात् (घ) क्रोशस्य

उत्तर– (क) क्रोशं

निर्देशानुसारम् उत्तरत –

1. 'सह' योगे का विभक्तिः ?

उत्तर तृतीया

2. 'विना' योगे का विभक्तिः ?

उत्तर–द्वितीया तृतीया, पंचमी वा।

3. 'रूच्' धातोः योगे का विभक्तिः ?

उत्तर–चतुर्थी

4. 'नमः' योगे का विभक्तिः ?

उत्तर–चतुर्थी

5. 'दा' धातोंः योगे का विभक्तिः ?

उत्तर–चतुर्थी

6. 'रमा 'कलमेन' पत्रं' लिखति अस्मिन् वाक्ये कलमेन पदे का विभक्ति?

उत्तर–तृतीया

7. 'वृक्षात्' पत्राणि पतन्ति' अस्मिन् वाक्ये वृक्षात् पदे का विभक्तिः ?

उत्तर–पंचमी

उचितविभक्तेः चयनं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

1. ....परितः वृक्षाः सन्ति (विद्यालय)

उत्तर–विद्यालयम्

2. .... खञ्जः अस्ति (पाद)

उत्तर–पादेन

3. .... नमः (गुरवे)

उत्तर–गुरवे

4. ....स्वाहा। (अग्नि)

उत्तर–अग्नये

5. ....पत्राणि पतन्ति। (वृक्ष)

उत्तर–वृक्षात्

6. .... कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति (कवि)

उत्तर–कविषु

7. सीता .... सह वनं गतवती। (राम)

उत्तर–रामेण

8. .... दुग्धं रोचते। (बालक)

उत्तर–बालकाय

9. धनिकः .... धनं यच्छति (निर्धन)

उत्तर–निर्धनाय

10. सीता............... पत्रं लिखति (कलम)

उत्तर–कलमेन

jharkhandlab.com

नवमः पाठः	कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्

1.एकपदेन उत्तरत

क) नीडेषु के प्रतिनिवर्तन्ते?
- कलविङ्काः।

(ख) भास्करः इति पदस्य समानार्थकपदं लिखत-
- सूर्यः।

(ग) शिवराजविजयस्य रचयिता कः अस्ति?
- बाणभट्टः।

(घ) वनात् पदे का विभक्तिः?
- पंचमी।

(ङ) अस्ति च सायं समयः, अस्तं जिगमिषुर्भगवान् भास्करः ।अत्र अव्ययपदं चिनुत।
- च ।

(च) शिववीरस्य विश्वासपात्रं सिंहदुर्गात् किं आदाय तोरणदुर्गं प्रयाति?
- पत्रम् ।

(छ) कुत्र अंधकारः अभवत् ?
- वने ।

(ज) भवतः पाठ्यपुस्तके शिवराजविजयम् इति ग्रंथात् कः पाठः संकलितः?
- कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम् ।

(झ) कतिवर्षदेशीयो युवा हयेन पर्वतश्रेणीरुपर्युपरि गच्छति स्म ?
- षोडशवर्षीयः ।

(ञ) मेघमाला कथं शोभते?
- पर्वतश्रेणीव

2.पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) सायं समये भगवान् भास्करः कुत्र : भवति?
- सायं समये भगवान् भास्करः अस्तं जिगमिषुः भवति ।

(ख) अस्ताचलगमनकाले भास्करस्य वर्णः कीदृशः भवति?
- अस्ताचलगमनकाले भास्करस्य वर्णः सिन्दूर-द्रव - स्नातानामिव प्रतीयते/ भवति।

(ग) नीडेषु के प्रतिनिवर्तन्ते ?
- नीडेषु कलविङ्काः / चटकाः प्रतिनिवर्तन्ते ।

(घ) शिववीरस्य विश्वासपात्रं किं स्थानं प्रयाति स्म?
- शिववीरस्य विश्वासपात्रं तोरणदुर्गं प्रयाति स्म।

(ङ) प्रतिक्षणमधिकाधिकां श्यामतां कानि कलयन्ति?
- प्रतिक्षणमधिकाधिकां श्यामतां वनानि कलयन्ति

(च) शिववीरविश्वासपात्रस्य उष्णीषं कीदृशमासीत् ?
- शिववीरविश्वासपात्रस्य उष्णीषं राजतसूत्र- शिल्पकृत-बहुल-चाकचिक्य-वक्र-हरितम् आसीत्।

(छ) मेघमाला कथं शोभते?
- मेघमाला पर्वतश्रेणीव शोभते ।

(ज) कतिवर्षदेशीयो युवा हयेन पर्वतश्रेणीरुपर्युपरि गच्छति स्म ?
- षोडशवर्षदेशीयो युवा हयेन पर्वतश्रेणीरुपर्युपरि गच्छति स्म ।

3.रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) अथाकस्मात् परितो मेघमाला........ प्रादुरभूत्।
- अथाकस्मात् परितो मेघमाला......पर्वतश्रेणीव....प्रादुरभूत्।

(ख) क्षणे क्षणे ....खुराश्चिक्कणपाषाणखण्डेषु प्रस्खलन्ति।
- क्षणेक्षणे...हयस्य.......खुराश्चिक्कणपाषाणखण्डषु प्रस्खलन्ति।

(ग) पदे पदे.............वृक्षशाखाः सम्मुखमाघ्नन्ति।
- पदे पदे......दोधूयमानाः........वृक्षशाखाः सम्मुखमाघ्नन्ति।

(घ) कृतप्रतिज्ञोऽसौ ....निजकार्यान्न विरमति।
- कृतप्रतिज्ञोऽसौ .....शिववीरो......निजकार्यान्न विरमति।

4. अधोलिखितानां पदानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धिनिर्देशं कुरुत

तस्यैव
शिखराच्छिकराणि
कोऽपि
प्रादुर्भूत्
अथाकस्मात्
कार्यान्न

उत्तराणि-

तस्यैव = तस्य+ एव (वृद्धिसन्धि)

शिखराच्छिकराणि= शिखरात्+शिखराणि(व्यञ्जनसन्धि)

कोऽपि= कः +अपि(पूर्वरूप सन्धिः-विसर्गसन्धिः)

प्रादुर्भूत्= प्रादुः+ अभूत् (विसर्गसन्धिः)

अथाकस्मात्=अथ+अकस्मात्(दीर्घस्वरसन्धिः)

कार्यान्न= कार्यात्+ न (व्यञ्जनसन्धिः)

5. अधोलिखितानां पदानां प्रकृतिप्रत्ययविभागं प्रदर्शयत-

प्रयुक्तः -
उत्थितः-
उत्प्लुत्य-
उपत्यकातः-
ग्रस्यमानः -

Jharkhandlab.com

उत्तराणि-

प्रयुक्तः -	प्र+युज्+ क्त
उत्थितः-	उत्+ स्था+क्त
उत्प्लुत्य-	उत्+ प्लु+ ल्यप्
उपत्यकातः-	उपत्यका+ तसिल्
ग्रस्यमानः -	ग्रस्+ शानच्

6. विग्रहवाक्यं विलिख्य समासनामानि निर्दिशत ।

मेघमाला -

महान्धकारः-

पर्वतश्रेणीः-

महोत्साहः-

विश्वासपात्रम्-

हरितोष्णीषशोभितः -

उत्तराणि-

मेघमाला - मेघानां माला (षष्ठी तत्पुरुषः)

महान्धकारः- महान् च असौ अन्धकारः(कर्मधारयः)

पर्वतश्रेणीः- पर्वतानाम् श्रेणी (षष्ठी तत्पुरुषः)

महोत्साहः- महान् च असौ उत्साहः (कर्मधारयः)

विश्वासपात्रम्- विश्वासस्य पात्रम् (षष्ठी तत्पुरुषः)

हरितोष्णीषशोभितः - हरितं यत् उष्णीष तेन शोभितः(बहुव्रीहिः)

7. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा विकल्पेभ्यः समीचीनोत्तरं चिनुत-

गद्यांशं-1

मासोऽयमाषाढः, अस्ति च सायं समयः , अस्तं जिगमिषुर्भगवान् भास्करः सिन्दूर-द्रव - स्नातानामिव वरुण- दिगवलम्बिनामरुण-वारिवाहानामभ्यन्तरं प्रविष्टः। कलविङ्काश्चाटकैर-रुतैः परिपूर्णेषु नीडेषु प्रतिनिवर्तन्ते ।वनानि प्रतिक्षणमधिकाधिकां श्यामतां कलयन्ति।अथाकस्मात् परितो मेघमाला पर्वतश्रेणीव प्रादुर्भूत्, पारस्परिक- संश्लेष - विहित-महान्धकारा च समस्तं गगनतलं पर्यच्छदीत्।

क. शिवराजविजयस्य रचयिता कः अस्ति?
(i) बाणभट्टः (ii) श्रीहर्षः
(iii) अम्बिकादत्तव्यासः (iv) माघः

ख. अकस्मात् पर्वतश्रेणीव का प्रादुर्भूत् ?
(i) मेघमाला (ii) सिन्दूर
(iii) कलविङ्का (iv) भास्करः

ग. कः वारिवाहानामभ्यन्तरं प्रविष्टः?
(i) कलविङ्का (ii) रचयिता
(iii) भास्करः (iv) अम्बिकादत्तव्यासः

घ. 'कलयन्ति' इति क्रियापदस्य कर्ता कः?
(i) कलविङ्काः (ii) वनानि
(iii) भास्करः (iv) मेघमाला

ङ. 'सूर्यः' इति स्थाने किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
(i) मेघमाला (ii) वनानि
(iii) जिगमिषुर्भगवान् भास्करः (iv) गगनतलम्

उत्तराणि

(क) (iii) अम्बिकादत्तव्यासः
(ख) (i) मेघमाला
(ग) (iii)भास्करः
(घ) (i) कलविङ्काः
(ङ) (iii) जिगमिषुर्भगवान् भास्करः

गद्यांशम्-2

अस्मिन् समये एकः षोडशवर्ष-देशीयो- गौरो युवा हयेन पर्वतश्रेणीरुपर्युपरि गच्छति स्म। एष सुघटितदृढशरीरः श्याम-श्यामैर्गुच्छ -गुच्छैः कुञ्चित-कुञ्चितैः कच -कलापैःकमनीय-कपोलपालिः दूरागमनायासवशेन सूक्ष्म-मौक्तिक-पटलेनेव स्वेदबिन्दु - व्रजेश समाच्छादित - ललाट-कपोल - नासाग्रोत्तरोष्ठः प्रसन्न - वदनाम्भोज - प्रदर्शित - दृढसिद्धांत- महोत्साहः, राजतसूत्र- शिल्पकृत - बहुल - चाकचिक्य - वक्र - हरितोष्णीष -शोभितः, हरितेनैव च कञ्चुकेन- व्यूहगूढचरता-कार्यः, कोऽपि शिववीरस्य विश्वासपात्रं सिंहदुर्गात् तस्यैव पत्रमादाय तोरणदुर्गं प्रयाति।

प्रश्नाः

च. युवा केन पर्वतश्रेणीरुपर्युपरि गच्छति स्म।
(i) गजेन (ii) हयेन
(iii) हंसेन (iv) रथेन

छ. कस्य विश्वासपात्रं सिंहदुर्गात् तोरणदुर्गं प्रति प्रयाति।
(i) षोडशवर्षस्य (ii) सूर्यस्य
(iii) मेघमालायाः (iv) शिववीरस्य

ज. शिववीरस्य विश्वासपात्रं सिंहदुर्गात् किं आदाय तोरणदुर्गं प्रयाति?
(i) पत्रम् (ii) स्वर्णम्
(iii) रुप्यकाणि (iv) मञ्जूषा

झ. 'केशसमूहैः' इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
(i) हयः (ii) पत्रम्
(iii) कचकलापैः (iv) वीरः

ञ. 'स्थूल' इति पदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
(i) पत्रम् (ii) सूक्ष्म
(iii) वीरः (iv) मेघमाला

उत्तराणि

(च) (ii) हयेन
(छ) (iv) शिववीरस्य
(ज) (i) पत्रम्
(झ) (iii) कचकलापैः
(ञ) (ii) सूक्ष्म

jharkhandlab.com

दशमः पाठः दीनबन्धुः श्रीनायारः

jharkhandlab.com

बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः

(1) 'दीनबन्धुः श्रीनायारः' इति कथा कस्मात् कथा संग्रहात् संकलिता।

(क) पाषाणीकन्यायाः (ख) कादम्बर्यायाः

(ग) समुद्रसंगमात् (घ) सिंहासनद्वात्रिंशिकायाः

उत्तर- (क) पाषाणीकन्यायाः

(2) ओडिशा राज्ये श्रीनायारः कुतः स्थानान्तरितः?

(क) कर्नाटकतः (ख) केरलतः

(ग) केन्द्रसर्वकारतः (घ) असमतः

उत्तर- (ग) केन्द्रसर्वकारतः

(3) श्रीनायारस्य विशेषतासीत्-

(क) सन्तुलितो वार्तालापः (ख) ससमये आगमनम्

(ग) सञ्चिकासु मनोनिवेशः (घ) त्रयोऽपि

उत्तर- (घ) त्रयोऽपि

(4) श्रीनायारः खाद्य आपूर्तिविभागे कस्मिन् पदे आसीत्?

(क) निदेशकपदे (ख) सचिवपदे

(ग) लिपिकपदे (घ) अध्यक्षपदे

उत्तर- (ख) सचिवपदे

(5) श्रीनायारस्य काले विभागस्य कार्यनैपुण्यं वर्धितम्-

(क) एकादश गुणैः (ख) पञ्चदश गुणैः

(ग) सप्तगुणैः (घ) दशगुणैः

उत्तर- (घ) दशगुणैः

(6) श्रीनायारस्य काले खाद्यापूर्ति विभागेन्यूनीभूतम्

(क) अपमिश्रणम् (ख) कार्यम्

(ग) खाद्यम् (घ) सामग्री

उत्तर- (क) अपमिश्रणम्

(7) श्रीनायारः वेतनस्य अर्धाधिकं भागं कुत्र प्रेषयति स्म?

(क) मेघालयम् (ख) कर्णाटकम्

(ग) मेघालयम् (घ) केरलम्

उत्तर- (घ) केरलम्

(8) एकं पत्रम् आगतम्

(क) कार्यालये (ख) गृहे

(ग) आश्रमे (घ) विद्यालये

उत्तर- (क) कार्यालये

(9) विभागस्य विपक्षे केषाम् अभियोगो नास्ति।

(क) मन्त्रिणाम् (ख) उपभोक्तृणाम्

(ग) लिपिकानाम् (ज) जनानाम्

उत्तर- (ख) उपभोक्तृणाम्

गद्यांशं पठित्वा एतदाधारितं प्रश्नानामुत्तराणि यथानिर्देशं लिखत-

श्रीनायारस्य दायित्वग्रहणस्य एकमासाभ्यन्तरे बहुदिनेभ्यः स्थगितानां विविध समस्यानामपि समाधानं जातम्। स्वकार्यं त्यक्त्वाअपरस्य सहकारस्तस्य परमधर्मः। सः प्रतिमासं प्रथमदिवसे स्ववेतनस्य अर्धाधिकं भागं केरलं प्रेषयति स्म। तेनानुमीयते तस्य राज्येन सह अस्ति कश्चित् सम्पर्कः। कानिचन मलयालमभाषायाः संवादपत्राणि अतिरिच्य कदापि तस्य नाम्ना किमपि पत्रमागतमिति कोऽपि कदापि न जानाति।

एकपदेन उत्तरत-

(क) स्वकार्यं त्यक्त्वा अपरस्य सहकार : कस्य परमधर्मः?

उत्तरम् - श्रीनायारस्य

(ख) श्रीनायारस्य दायित्वग्रहणस्य एकमासाभ्यन्तरे कासां समाधानं जातम्?

उत्तरम्- विविध - समस्यानाम्

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) श्रीनायारः प्रतिमासं प्रथमदिवसे केरलं किं प्रेषयति स्म?

उत्तरम्- श्रीनायारः प्रतिमासं प्रथमदिवसे स्ववेतनस्य अर्धाधिकं भागं केरलं प्रेषयति स्म।

निर्देशानुसारं उत्तरत

(क) स्थगितानाम् इति विशेषणस्य अत्र विशेष्यपदं किम्?

उत्तरम्- समस्यानाम्

गद्यांशः

एकस्मिन् दिने श्रीनायारःपत्रमेकं धृत्वा मस्तकमवनमय्य पठन् आसीत्। नेत्रतीराद् विगलिता अश्रुधारा आर्द्रीकरोति स्म पत्रस्य अर्धाधिकं भागम्। तदानीमेव तस्य कार्यालयलिपिकः श्रीदासः प्रविशति। श्रीनायारः तमुक्तवान् अधुना मम गमनसमयः समुपागत एव। मम दायित्वहस्तान्तरणपत्रकं सज्जीकुरु। अहमधुना द्वित्राणां दिवसानां सकारणावकाशं स्वीकरिष्यामि। पुनः तदनु स्वीकरिष्यामि दीर्घावकाशम्। यदि कस्मैचिद् अज्ञातेन मया रूक्षो व्यवहारः प्रदर्शितः स्यात्, तदर्थं ते मह्यमुदारचित्तेन क्षमां प्रदास्यन्ति इति सर्वेभ्यो निवेदयतु। अनन्तरं सर्वे अश्रुलहृदयैः सौप्रस्थानिकीं ज्ञापितवन्तः।

एकपदेन उत्तरत-

क कः दीर्घावकाशं स्वीकरिष्यति?

उत्तरम्- श्रीनायारः

ख सर्वे कैः सौप्रस्थानिकीं ज्ञापितवन्तः?

उत्तरम्- अश्रुलहृदयैः

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

क पत्रस्य अर्धाधिकं भागं का आर्द्रीकरोति स्म?

उत्तरम्- श्रीनायारस्य नेत्रतीराद् विगलिता अश्रुधारा पत्रस्य अर्धाधिकं भागं आर्द्रीकरोति स्म।

निर्देशानुसारम् उत्तरत-

क 'कठोरः' इत्यर्थे कः पर्याय प्रयुक्तः ?

उत्तरम्- रुक्षः

संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत-

(क) श्रीनायारः कुत्र गमनाय इच्छां न प्रकटितवान् ?

उत्तरम् - श्रीनायारः स्वराज्यं केरलं प्रतिगमनाय इच्छां न प्रकटितवान्

(ख) विभागस्य विपक्षे केषाम् अभियोगो नास्ति ?

उत्तरम्- विभागस्य विपक्षे उपभोक्तृणाम् अभियोगो नास्ति ।

(ग) श्रीनायारः स्ववेतनस्य अर्धाधिकं भागं कुत्र प्रेषयति स्म ?

उत्तरम् श्रीनायारः स्ववेतनस्य अर्धाधिकं भागं केरलं प्रेषयति स्म ।

(घ) श्रीनायारस्य नेत्रतीराद् विगलिता अश्रुधारा किम् अकरोत् ?

उत्तरम् श्रीनायारस्य नेत्रातीराद् विगलिता अश्रुधारा पत्रस्य अर्धाधिकं भागं आर्द्रीकरोति स्म ।

(ङ) बहुदिनेभ्यः स्थगितानां समस्यानां समा धानं कदा जातम् ?

उत्तरम्- बहुदिनेभ्यः स्थगितानां समस्यानां समाधानं श्रीनायारस्य दायित्वग्रहणस्य एकमासाभ्यन्तरे जातम् ।

(च) श्रीनायारस्य पार्श्वे पत्रं कया प्रेषितम् ?

उत्तरम्- श्रीनायारस्य पार्श्वे पत्र सुश्री मेर्या प्रेषितम्

(छ) आश्रमे के लालिताः पालिताश्च भवन्ति ?

उत्तरम् आश्रमे अनाथशिशवः लालिताः पालिताश्च भवन्ति।

(ज) पत्रलेखिका कस्य हस्तयोः अनाथाश्रमं समर्प्य सौप्रस्थानिकिमिच्छति ?

उत्तरम्- पत्र लेखिका श्रीनायारस्य हस्तयोः अनाथाश्रमं समर्प्य सौप्रस्थानिकीमिच्छति

एकपदेन उत्तरत -

(1) श्रीनायारःकुत्रतःआगत्य ओडिशा सर्वकारस्य अधीनेकार्यंकरोति ?

उत्तरम केन्द्रसर्वकारतः

(2) खाद्ये किं न्यूनीभूतम् ?

उत्तरम अपमिश्रणम्

(3) केषां मध्ये श्रीनायारस्य सुख्यातिः आसीत् ?

उत्तरम मन्त्रिणां मध्ये

(4) श्रीनायारस्य लिपिकः कः आसीत् १

उत्तरम श्रीदासः

(5) कः दीर्घावकाशं स्वीकरिष्यति

उत्तरम श्रीनायारः

(6) पत्रम् कुत्र आगतम् ?

उत्तरम कार्यालये

(7) पत्रस्य लेखिका का आसीत् ?

उत्तरम सुश्री मेरी

(समस्तपदानां विग्रहाः दत्ता तानाश्रित्य समस्तपदानि रचयत समासनामापि लिखत।)

(क) कालस्य खण्डः तस्मिन्

(ख) कर्मसु नैपुण्यम्

(ग) द्वि च त्रि च अनयोः समाहारः तेषाम्

(घ) दीर्घ अवकाशः, तम्

(ङ) धनाय आदेशः, तेन

(च) जीवनस्य प्रदीपः

उत्तराणि

(क) कालखण्डे- षष्ठी त०पु

(ख) कर्मनैपुण्यम् - सप्तमी त०पु०

(ग) द्वित्राणाम्- द्वन्द्वसमासः

(घ) दीर्घावकाशम्-कर्मधारयः

(ङ) धनादेशेन- तृतीया तत्पुरुषः

(च) जीवनप्रदीपः - षष्ठी त० पु०

(विपरीतार्थकपदानि मेलयत)

(क)	आगत्य	(क)	विस्मृत
(ख)	इच्छाम्	(ख)	गत्वा
(ग)	स्वल्पभाषी	(ग)	न्यूनीभूतम्
(घ)	प्रारभ्य	(घ)	पक्षे
(ङ)	अधिकीभूतम्	(ङ)	बहुभाषी
(च)	विपक्षे	(च)	समाप्य
(छ)	स्मृतः	(छ)	लघुजीवनम्
(ज)	दीर्घजीवनम्	(ज)	अनिच्छाम्

उत्तरणि

क- ख

ख- ज

ग- ङ

घ- च

ङ- ग

च- घ

छ- क

ज- छ

(अधोलिखितेषु पदेषु प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत।

समाप्य जातम्, त्यक्त्वा धृत्वा पठन् संपोष्य ।)

उत्तराणिः

सम्+आप्+ ल्यप्

जन्+ क्त

त्यज् + क्त्वा

धृ + क्त्वा

पठ्+ शतृ

सम्+ पुष् + ल्यप्

Jharkhandlab.com

एकादशः पाठः — उद्भिज्ज परिषद्

निर्देशः उचितं उत्तरं चित्त्वा लिखत........

1. उद्भिज्ज परिषद् इति पाठस्य लेखकः कः ?
   i) हृषीकेशः भट्टाचार्य ः ii) श्री दासः
   iii) अम्बिकादत्तव्यासः iv) महत्मागान्धी

2. 'उद्भिज्ज परिषद् ' पाठः कस्य पुस्तकस्य संक्षिप्तरूपः ?
   i) गङ्गालहरीग्रन्थस्य ii) प्रबन्धमञ्जरीग्रन्थस्य
   iii) मेघदूतस्य iv) गीतगोविन्दस्य

3. 'उद्भिज्ज' इत्यस्य शब्दस्य अर्थः कः ?
   i) फलम् ii) पुष्पम्
   iii) वृक्षः iv) पत्रम्

4. उद्भिज्जपरिषदः सभापतिः कः ?
   i) अश्वत्थवृक्षः ii) वटवृक्षः
   iii) आम्रवृक्षः iv) शाल्मलीवृक्षः

5. मानवाः कम् उपेक्षन्ते ?
   i) वैरम् ii) वाचम्
   iii) कार्यम् iv) स्नेहम्

6. सृष्टिधारासु मानवो नाम कीदृशी सृष्टिः ?
   i) उत्कृष्टतमा ii) निकृष्टतमा
   iii) सर्वोत्कृष्टतमा iv) सुन्दरतमा

7. पशुहत्या केषाम् आक्रीडनम् भवति ?
   i) पक्षिणाम् ii) वृक्षाणाम्
   iii) असुरानाम् iv) मानवानाम्

8. के महारण्यम् उपगम्य पशुघातं कुर्वन्ति ?
   i) मानवाः ii) पक्षिणः
   iii) देवाः iv) असुराः

9. वीरपुरुषाः इव के निपतन्ति ?
   i) निर्झराः ii) गिरयः
   iii) गृहाणि iv) वृक्षाः

10. अमङ्गलमिव उपध्नन्ति.................. ।रिक्तस्थाने उचितं शब्दं चित्त्वा लिखत........
    i) मित्रम् ii) छात्रम्
    iii) विश्वासम् iv) अधिकारम्

11. मानवाः कस्मात् कारणात् वृक्षान् छिदन्ति ?
    i) प्रेमवशात् ii) लोभवशात्
    iii) स्नेहवशात् iv) क्रोधवशात्

12. 'आत्मोन्नतिम्' इत्यस्य पदस्य सन्धिविच्छेदं कुरुत........
    i) आत्मो + न्नतिम् ii) आत्मा + नतिम्
    iii) आत्मोन्नत् + इम् iv) आत्म + उन्नतिं

उत्तराणि

1.	I	2.	Ii
3.	Iii	4.	I
5.	Iv	6.	Ii
7.	Iv	8.	I
9.	Iv	10.	Iii
11.	Ii	12.	Iv

एकपदेन उत्तरत-

(क) उद्भिज्जपरिषद् इति पाठस्य लेखकः कः अस्ति ?
उत्तर - पण्डितहृषीकेशभट्टाचार्यः ।

(ख) पशुहत्या केषाम् आक्रीडनम्?
उत्तर - मनुष्याणाम्

(ग) मनुष्याणां हिंसावृतिः कीदृशी ?
उत्तर - निरवधिः

(घ) सृष्टिधारासु मानवो नाम कीदृशी सृष्टिः?
उत्तर - निकृष्टतमा

(ङ) अश्वत्थमते मानवाः तृणवत् कम् उपेक्षन्ते?
उत्तर - स्नेहम्

(च) उद्भिज्जपरिषदः सभापतिः कः आसीत्?
उत्तर - अश्वत्थदेवः।

(छ) निकृष्टतमः इति पदे कः प्रत्ययः प्रयुक्तः?
उत्तर - तमप्

(ज) वीरपुरुषाः इति पदे कः समासः ?
उत्तर - कर्मधारयसमासः

(झ) 'आत्मोन्नतिम्' पदस्य सन्धिविच्छेदं कुरुत।
उत्तर - आत्मा+उन्नतिम्

पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(क) उद्भिज्जपरिषदः सभापतिः कः आसीत्?
उत्तर - उद्भिज्जपरिषदः सभापतिः अश्वत्थदेवः आसीत् ।

(ख) उद्भिज्जपरिषद् इति पाठस्य लेखकः कः अस्ति ?
उत्तर- उद्भिज्जपरिषद् इति पाठस्य लेखकः पण्डितहृषीकेशभट्टाचार्यः अस्ति ।

(ग) अश्वत्थमतौ मानवाः तृणवत् कम् उपेक्षन्ते ?
उत्तर- अश्वत्थमतौ मानवाः तृणवत् स्नेहम् उपेक्षन्ते।

(घ) सृष्टिधारासु मानवो नाम कीदृशी सृष्टिः?
उत्तर - सृष्टिधारासु मानवो नाम सृष्टिः निकृष्टतमा अस्ति।

jharkhandlab.com

(ङ) मनुष्याणां हिंसावृतिः कीदृशम्?
उत्तर - मनुष्याणां हिंसावृतिः निरवधिः।

(च) पशुहत्या केषाम् आक्रीडनम्?
उत्तर - पशुहत्या मनुष्याणाम् आक्रीडनम्।

(छ) श्वापदानां हिंसाकर्म कीदृशम्?
उत्तर - श्वापदानां हिंसाकर्म जठरानलनिर्वाणमात्राय प्रयोजकम्।

(ज) 'उद्भिज्जपरिषद्' इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् उद्धृतः?
उत्तर - उद्भिज्जपरिषद्' इति पाठः 'प्रबन्ध मञ्जुरी' इति ग्रंथात् उद्धृतः।

3. रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) मानवा नाम सर्वासु सृष्टिधारासु .... सृष्टिः।

(ख) मनुष्याणां.............. निरवधिः।

(ग) नहि ते करतलगतानपि ....उपध्नन्ति।

(घ) परं तृणवद् उपेक्षन्ते ....।

(ङ) न केवलमेते पशुभ्यो निकृष्टास्तृणेभ्योऽपि.........एव।

उत्तर -

(क) मानवा नाम सर्वासु सृष्टिधारासु .....निकृष्टतमा....... सृष्टिः।

(ख) मनुष्याणां........हिंसावृत्तिः....... निरवधिः।

(ग) नहि ते करतलगतानपि .....हरिणशशकादीन्........उपध्नन्ति।

(घ) परं तृणवद् उपेक्षन्ते .....स्नेहम्.........।

(ङ) न केवलमेते पशुभ्यो निकृष्टास्तृणेभ्योऽपि...निस्सारा......एव।

4. प्रकृति-प्रत्ययविभागः क्रियताम्।

(क) निकृष्टतमा

(ख) उपगम्य

(ग) प्रवर्तमाना

(घ) व्याख्याय

(ङ) आक्रीडनम्

(च) निकृष्टतरा

(छ) स्थूलतमा

उत्तर --

(क) निकृष्टतमा- नि+कृष्+ तमप्+टाप्
(ख) उपगम्य - उप+गम्+ल्यप्
(ग) प्रवर्तमाना - प्र+ वृत्+ शानच्+ टाप्
(घ) व्याख्याय -वि+आ+ख्या+ल्यप्
(ङ) आक्रीडनम् - आ+ क्रीड्+ ल्युट्
(च) निकृष्टतरा - नि+ कृष्+ तरप्+ टाप्
(छ) स्थूलतमा -स्थूल+ तमप्+ टाप्

5. सन्धिविच्छेदं कुरुत-

(क) मानवा इव

(ख) भवन्तो नित्यम्

(ग) स्वोदरपूर्तिम्

(घ) हिंसावृत्तिस्तु

(ङ) आत्मोन्नतिम्

(च) वृक्षास्तारयन्ति

(छ) एकेनापि

(ज) पुत्रास्ते

(झ) घातार्थम्

(ञ) निरवधिः

उत्तर --

(क) मानवा इव = मानवा + इव
(ख) भवन्तो नित्यम् = भवन्तः + नित्यम्
(ग) स्वोदरपूर्तिम् = स्व + उदरपूर्तिम्
(घ) हिंसावृत्तिस्तु = हिंसावृत्तिः +तु
(ङ) आत्मोन्नतिम् = आत्मा + उन्नतिम्
(च) वृक्षास्तारयन्ति = वृक्षाः + तारयन्ति
(छ) एकेनापि = एकेन + अपि
(ज) पुत्रास्ते = पुत्राः + ते
(झ) घातार्थम् = घात + अर्थम्
(ञ) निरवधिः = निः + अवधिः

6. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्त प्रश्नानाम् समीचीनोत्तरं विकल्पेभ्यः चिनुत-

निरन्तरम् आत्मोन्नतये चेष्टमानाः लोभाक्रान्त-हृदयाः- मनुजन्मानः किल प्रतिक्षणं स्वार्थसाधनाय सर्वात्मना प्रवर्तन्ते। न धर्ममनुधावन्ति, न सत्यमनुबध्नाति। परं तृणवद् उपेक्षन्ते स्नेहम्। अहितमिव परित्यजन्ति आर्जवम्।अमङ्गलमिव उपध्नन्ति विश्वासम्।न स्वल्पमपि बिभ्यति पापाचारेभ्यः, न किञ्चिदपि लज्जन्ते मुहुरनृतव्यवहारात्। नहि क्षणमपि विरमन्ति परपीडनात्।

(क) मानवाः तृणवद् कम् उपेक्षन्ते?
(i) पीड़ा (ii) पुत्रम्
(iii) स्नेहम् (iv) आर्जवम्

(ख) मनुष्याः कस्य साधनाय पूर्णरूपेण प्रयतन्ते ?
(i) परार्थस्य (ii) स्वार्थस्य
(iii) परोपकारस्य (iv) सेवाया

(ग) 'सरलता' इति अर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
(i) आर्जवम् (ii) स्वार्थम्
(iii) मनुजम् (iv) मङ्गलम्

(घ) 'प्रवर्तन्ते' इति क्रियापदस्य किं कर्तृपदमत्र प्रयुक्तम्
(i) ऋषयः (ii) पशवः
(ii) पक्षिणः (iv) मनुजन्मानः

(ङ) 'मनुजन्मानः' इति पदस्य किं विशेषणम्?
(i) लोभाक्रान्तहृदयाः (ii) अलोभाक्रान्तहृदया
(iii) पीडितहृदया (iv) परोपकारहृदया

(च) ' मङ्गलम्' इति पदस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
(i) आर्जवम् (ii) अमङ्गलम्
(iii) धर्मम् (iv) मुहुर्मुहुः

(छ) अव्ययं चिनुत-
(i) आर्जवम् (ii) विश्वासम्
(iii) न (iv) चेष्टमानाः

Jharkhandlab.com

(ज) 'अमङ्गलम्' अस्य सामासिकविग्रहं चिनुत-

(i) न मङ्गलम् (ii) सुष्ठुः मंगलम्

(iii) अति मंगलम् (iv) मंगले इति

उत्तराणि–

(क) (iii) स्नेहम्

(ख) (ii) स्वार्थस्य

(ग) (i)आर्जवम्

(घ) (iv) मनुजन्मानः

(ङ) (i)लोभाक्रान्तहृदयाः

(च) (ii) अमङ्गलम्

(छ) (iii) न

(ज) (i)न मङ्गलम्

Jharkhandlab.com

द्वादशः पाठः — किन्तोः कुटिलता

Jharkhandlab.com

1.एकपदेन उत्तरत-

(क) वाक्यमध्ये प्रविश्य सर्वं कार्यं केन विनाश्यते?

उत्तर - किन्तु' ना

(ख) कं कर्म सम्पन्नं विना विवाहः न परिगण्येत् ?

उत्तर- चतुर्थी

(ग) नेतृमहोदयः पुस्तकप्रशंसां कुर्वन् 'किन्तु' प्रयोगेन कं परामर्शम् अददात्?

उत्तर- लेखकम्

(घ) धर्मव्यवस्थापकः विधवायाः पुनर्विवाहमुचितं मन्यमानोऽपि व्यवस्थां किमर्थं न ददौ?

उत्तर- प्राचीनमर्यादां रक्षितुम् ।

(ङ) कीदृशं भोजने अवधानम् अत्यावश्यकम्?

उत्तर-'गरिष्ठभोजने ।

(च) कस्य विभागस्य अधिकारी 'किन्तु' युक्तं पत्रं प्रेषयित्वा बाधा उपस्थापितः?

उत्तर- राजस्वविभागस्य

(छ) 'कार्ये' पदे का विभक्तिः?

उत्तर- सप्तमी

(ज) 'शत्रुता' इत्यस्य विलोमपदं किम्?

उत्तर- मित्रता

(झ) 'प्रविष्टः' पदे कः प्रत्ययः प्रयुक्तः?

उत्तर- क्त प्रत्ययः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(क) भूमिविषयके अभियोगे 'किन्तु' -ना का बाधा उपस्थापिता ?

उत्तर - भूमिविषयके अभियोगे राजस्वविभागप्रधानाधिकारी तद् विरोधे प्रेषितवान् ,इति 'किन्तु' -ना बाधा उपस्थापिता।

(ख) वाक्यमध्ये प्रविश्य सर्वं कार्यं केन विनाश्यते?

उत्त- वाक्यमध्ये प्रविश्य सर्वं कार्यं 'किन्तु' -ना विनाश्यते।

(ग) नेतृमहोदयः पुस्तकप्रशंसां कुर्वन् 'किन्तु' प्रयोगेन कं परामर्शम् अददात्?

उत्तर- नेतृमहोदयः पुस्तकप्रशंसां कुर्वन् 'किन्तु' प्रयोगेन लेखकं परामर्शम् अददात्।

(घ) भोजन-गोष्ठीस्थले कीदृशी प्रदर्शनी समायोजिता आसीत् ?

उत्तर- भोजन-गोष्ठीस्थले सर्वाङ्गपूर्णा एका भोज्यव्यंजनानां प्रदर्शनी समायोजिता आसीत् ।

(ङ) भोजनगोष्ठ्यां लेखकस्य कण्ठनलिकां कः अरुधत्?

उत्तर- भोजनगोष्ठ्यां लेखकस्य कण्ठनलिकां स्वामिमहोदयस्य 'किन्तु' अरुधत्।

(च) धर्मव्यवस्थापकः विधवायाः पुनर्विवाहमुचितं मन्यमानोऽपि व्यवस्थां किमर्थं न ददौ?

उत्तर- धर्मव्यवस्थापकः विधवायाः पुनर्विवाहमुचितं मन्यमानोऽपि व्यवस्थां प्राचीनमर्यादारक्षितुं न ददौ ।

(छ) गृहिणी पत्युः कर्णसमीपे आगत्य शनैः किम् अवदत्?

उत्तर - गृहिणी पत्युः कर्णसमीपे आगत्य शनैः अवदत्- अन्धकारेऽस्मिन् यासि त्वमवश्यम् ,'किन्तु' दृश्यतां स शस्त्रं न प्रहरेत्।

(ज) किन्तोः सार्वदिकः प्रभावः कः ?

उत्तर - किन्तोः सार्वदिकः प्रभावः अस्ति यत् वार्ता काममुत्तमास्तु अधमा वा परमयं मध्ये प्रविश्य तस्याः कथायाविच्छेदमवश्यं करिष्यति।

3. उपयुक्तशब्दान् चित्वा रिक्तस्थानानां पूर्तिः विधेया-

(दुर्घटा, अवधानम्, सन्दानितः, स्वामिमहोदयम्, संस्कृते, विवाहस्य, शान्तम्, पलायाञ्चक्रे,कालात्, सङ्कटे)

(क) अहम् .... अप्राक्षं किमहं तत्र गन्तुं शक्नोमि।

(ख) अस्य 'किन्तोः' कारणात् कस्मिन्नपि कार्ये सफलता .... अस्ति।

(ग) तस्य स्वादसूत्रेण .... अहं तथैव द्वितीयं ग्रासमगृह्णं तथैव 'किन्तुः' मम कण्ठनलिकामरुधत्।

(घ) गरिष्ठवस्तूनो भोजने .... अत्यावश्यकम्।

(ङ) विगुणः कार्षापणः कुत्सितश्च पुत्रः ....कदाचिदुपयुक्तो भवेत्।

(च) राज्यतो लब्धाया भूमेरभियोगो बहोः .... न्यायालये चलति स्म।

(छ) मम सर्वोऽपयुत्साहः ....।

(ज) अहं निश्चिन्तताया एकं ....निःश्वासमुचम्।

(झ) जातस्य तस्याः .... अद्य तृतीयो दिवसः ।

(ञ) बहुकालानन्तरं .... एवं विधां नवीनता दृष्टिगताऽभवत् ।

उत्तराणि--

(क) अहम् ....स्वामिमहोदयम्....... अप्राक्षं किमहं तत्र गन्तुं शक्नोमि।

(ख) अस्य 'किन्तोः' कारणात् कस्मिन्नपि कार्ये सफलता ...... दुर्घटा.......अस्ति।

(ग) तस्य स्वादसूत्रेण ....सन्दानितः....... अहं तथैव द्वितीयं ग्रासमगृह्णं तथैव 'किन्तुः' मम कण्ठनलिकामरुधत्।

(घ) गरिष्ठवस्तूनो भोजने ...अवधानम्...... अत्यावश्यकम्।

(ङ) विगुणः कार्षापणः कुत्सितश्च पुत्रः ......सङ्कटे......... कदाचिदुपयुक्तो भवेत्

(च) राज्यतो लब्धाया भूमेरभियोगो बहोः......कालात्....... न्यायालये चलति स्म।

(छ) मम सर्वोऽपयुत्साहः ......पलायाञ्चक्रे.........।

(ज) अहं निश्चिन्ततायाः एकं ....शान्तम्.........निःश्वासमुचम्।

(झ) जातस्य तस्याः ......विवाहस्य........... अद्य तृतीयो दिवसः ।

(ञ) बहुकालानन्तरं ....संस्कृते.............. एवं विधां नवीनता दृष्टिगताऽभवत् ।

4. अधोलिखितैः उचितक्रियापदैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

परिगण्येत, परावर्तिषि, आच्छिनत्ति, मन्यामहे, दीयेत, अलिखिष्यत्

(क) प्रधानः एकं पत्रं प्रेषितवानस्ति।एतदुपर्यपि लक्ष्यदानमावश्यकं ....।

(ख) गृहाभिमुखं मुखं कुर्वन् तस्मात् स्थानादेव ....।

(ग) यदि हिन्दीभाषायाम् .... तर्हि सम्यगभविष्यत्।

(घ) इदमेवोचितं प्रतीयते यत् एवंविधस्थले पुनर्विवाहस्य व्यवस्था...............।

(ङ) कदाचित् कदाचित्त्वयं क्रूरः 'किन्तु' मुखस्य कवलमपि ....।

(च) नाद्यापि चतुर्थीकर्म सम्पन्नं येन विवाहः.............।

उत्तराणि-

(क) प्रधानः एकं पत्रं प्रेषितवानस्ति।एतदुपर्यपि लक्ष्यदानमावश्यकं ....मन्यामहे.........।

(ख) गृहाभिमुखं मुखं कुर्वन् तस्मात् स्थानादेव ....परावर्तिषि.......।

(ग) यदि हिन्दीभाषायाम् ......अलिखिष्यत्......... तर्हि सम्यगभविष्यत्।

(घ) इदमेवोचितं प्रतीयते यत् एवंविधस्थले पुनर्विवाहस्य व्यवस्था......दीयेत.........।

(ङ) कदाचित् कदाचित्त्वयं क्रूरः 'किन्तु' मुखस्य कवलमपि .... आच्छिनत्ति..........।

(च) नाद्यापि चतुर्थीकर्म सम्पन्नं येन विवाहः......परिगण्येत......।

5. सन्धिविच्छेदं कुरुत-

(क) तत्रैवास्य ....

(ख) सर्वाण्येव ....

(ग) मन्निर्मितमेकम् ....

(घ) किलैकोऽधिकारी ....

(ङ) द्वयोरुपर्येव ....

उत्तर #

(क) तत्रैवास्य = तत्र+एव+अस्य

(ख) सर्वाण्येव = सर्वाणि + एव

(ग) मन्निर्मितमेकम् = मत्+ निर्मितम्+एकम्

(घ) किलैकोऽधिकारी = किल+ एकः+ अधिकारी

(ङ) द्वयोरुपर्येव= द्वयोः+ उपरि+ एव

6. प्रकृतिप्रत्ययविभागः क्रियताम्-

(क) निर्मुच्य ....

(ख) आदाय.................

(ग) प्रविष्टः.................

(घ) आगत्यः.................

(ङ) परिज्ञातम्:.................

उत्तर -

(क) निर्मुच्य= निर्+ मुच्+ल्यप्

(ख) आदाय= आ+दा+ल्यप्

(ग) प्रविष्टः= प्र+ विश्+ क्त

(घ) आगत्य= आ+गम्+ल्यप्

(ङ) परिज्ञातम्= परि+ ज्ञा+ क्त

7. अधोलिखितेषु पदेषु विभक्तिं वचनं च लिखत-

(क) कार्ये-

(ख) अभियोक्तुः-

(ग) बालिकायाः-

(घ) न्यायालयेन-

(ङ) नेतुः-

(च) शक्तौ-

(छ) औषधिम्-

उत्तर -

(क) कार्ये- सप्तमी एक.

(ख) अभियोक्तुः-पंचमी/ षष्ठी एक.

(ख) बालिकायाः- -पंचमी/ षष्ठी एक.

(ग) न्यायालयेन- तृतीया एक.

(घ) नेतुः-पचमी/ षष्ठी एक.

(ङ) शक्तौ- सप्तमी एक.

(च) औषधिम्- द्वितीया एक.

8. विलोमपदं लिखत-

(क) विगुणः-

(ख) शौर्यम्

(ग) सुरक्षितः

(घ) शत्रुता

(ङ) धीरः

(च) भयम्

उत्तर -

(क) विगुणः- सगुणः

(ख) शौर्यम्- भीरुता/कायरता

(ग) सुरक्षितः-असुरक्षितः

(घ) शत्रुता- मित्रता

(ङ) धीरः- अधीरः

(च) भयम्- निर्भयम्

9. बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः-

(क) 'किन्तोः कुटिलता ' पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः?

(i) कथासागरात् (ii) प्रबन्ध-परिजातः

(iii) पाषाणीकन्यायाः (iv) रामायणात्

(ख) 'प्रबन्ध-परिजातः' इत्यस्य ग्रंथस्य रचयिता कः?

(i) भट्टमथुरानंदशास्त्री (ii) विद्यापतिः

(iii) कालिदासः (iv) माघः

(ग) 'नेतुः' इति पदस्य मूलशब्दः कः?

(i) नेता (ii) नी

(iii) नेतृ (iv) नेत्री

(घ) 'इतिश्री' पदस्य अर्थं चिनुत-

(i) आरम्भः (ii) प्रारम्भः

(iii) समाप्ति (iv) मध्ये

Jharkhandlab.com

(ङ) 'कुन्तः' शब्दस्य अर्थं चिनुत-

(i) भाला (ii) लाठी

(iii) तलवार (iv) बाणम्

(च) अहं देशसेवां कर्तुं गृहात् बहिः अगच्छम्। एतस्मिन् वाक्ये अव्ययपदं चिनुत-

(i) कर्तुं (ii) गृहात्

(iii) देशसेवा (iv) बहिः

(छ) 'महाराज' इति पदस्य सामासिकविग्रहं लिखत-

(i) राजा महान् (ii) महा राजा

(iii) महान् च असौ राजा (iv) राजा महान्

(ज) 'नववार्षिकी कन्या' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?

(i) कन्या (ii) वार्षिकी

(iii) नववार्षिकी (v) नव

उत्तर -

(क) (ii) प्रबन्ध-परिजातः

(ख) (i) भट्टमथुरानंदशास्त्री

(ग) (iii) नेतृ

(घ) (iii) समाप्ति

(ङ) (i) भाला

(च) (iv) बहिः

(छ) (iii) महान् च असौ राजा

(ज) (i) कन्या

Jharkhandlab.com

त्रयोदशः पाठः | योगस्य वैशिष्ट्यम्

Jharkhandlab.com

बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः

(1) योगसूत्रस्य रचनाकारः कः ?
(क) कालिदासः (ख) बाणभट्टः
(ग) पतञ्जलिः (घ) भारविः

(2) योगस्य कति अङ्गानि सन्ति ?
(क) सप्त (ख) अष्ट
(ग) नव (घ) पंच

(3) योगस्य वैशिष्ट्यम्' 'पाठानुसारं स्थिरसुखं किम् ?
(क) यम (ख) नियम
(ग) आसनम् (घ) धारणा

(4) विद्याध्ययने अपि योगस्य उपयोगः ....।
(क) भवति (ख) दुष्करम्
(ग) सम्भवति (घ) असम्भवम्

(5) 'योगः स्वास्थ्यकरः' इति केन उक्तम्-
(क) सागरिकया (ख) स्वप्रिलेन
(ग) मोहिन्या (घ) सागरेण

(6) कक्षायां कः प्रविशति ?
(क) प्रधानाचार्यः (ख) वेदाचार्य
(ग) योगशिक्षकः (घ) बालकः

(7) अस्माकंकृते योगशिक्षा -
(क) जनदायिनी (ख) फलदायिक धनदायिनी
(ग) उपयोगिनी (घ) अनुपयोगिनी

(8) चित्तवृतिः निरोधः कः,?
(क) योगः (ख) शोकः
(ग) मौनः (घ) भोगः

(9) पाठ माध्यमेन योगशिक्षां शिक्षयति -
क) योगशिक्षकः (ख) शिक्षकः
(ग) प्रधानशिक्षकः (घ) क्रीड़ा शिक्षकः

(10) विश्वयोगदिवसः कदा मान्यते/समायोज्यते ?
(क) 20 जून (ख) 21 जून
(ग) 25 जून (घ) 30 जुलाई

उत्तराणि

1-	ग	2-	ख
3-	ग	4-	क
5-	क	6-	ग
7-	ग	8-	क
9-	क	10-	ख

अधोलिखितनाट्यांशं पठित्वा तदाधारितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि निर्देशानुसारं लिखत

स्वप्रिल-बलराम,!अद्य कक्षायां कोऽपि विशिष्टः कार्यक्रमः?

बलराम- अरे मित्र त्वं न जानासि?इदानीं तु योगशिक्षायाः कालांशः।

मोहिनीः-एषः तु नूतनःविषयः किं प्रतिदिनम् ईदृशी कक्षा प्रचलिष्यति?

बलरामः-आम् अस्माकं कृते योगशिक्षा अतीव उपयोगिनी अस्ति।

सागरिका -अहो! सुखदामाश्चर्यम्। अहमपि गृहे मातुः मुखाद् योगशिक्षायाः विषये श्रुतवती।

तया उक्तम्-योगःस्वास्थ्यकरः।

सागरः-किं विद्याध्ययनेऽपि अस्योपयोगः वर्तते?

प्रश्नाः

एकपदेन उत्तरत

(क) मातुः मुखाद् योगशिक्षायाः विषये का श्रुतवती ?

उत्तरम् सागरिका

(ख) छात्राः कस्मिन् विषये ज्ञातुम् उत्सुकाः सन्ति ?

उत्तरम्- योगविषये

पूर्णवाक्येन उत्तरत

(क) कः स्वास्थ्यकरः :

उत्तरम- योगः स्वास्थ्यकरः

(ख) अधुना योगशिक्षा कीदृशी अस्ति ?

उत्तरम अधुना योगशिक्षा अतीव उपयोगिनी अस्ति।

(ग) अस्योपयोगःइत्यस्यस्य सन्धि विच्छेदं लिखत ।

उत्तरम अस्य + उपयोगः

अधोलिखितप्रश्नानां उत्तरं संस्कृतेन लिखत ।

(क) योग कः कथ्यते?

उत्तरम चित्तवृत्तीनां निरोधःयोगः कथ्यते ।

(ख) मातुः मुखाद्, योगशिक्षायाः विषये का श्रुतवती?

उत्तरम मातुः मुखाद् योगशिक्षायाः विषये सागरिका श्रुतवती।

(ग) छात्राः कस्मिन् विषये ज्ञातुम् उत्सुकाः सन्ति ?

उत्तरम योगस्य विषये।

(घ) प्रमाणानि कानि ?

उत्तरम प्रत्यक्षानुमानागमः प्रमाणानि।

(ङ) स्मृतिः का कथ्यते ?

उत्तरम अनुभूतविषया सम्प्रमोषः स्मृतिः।

(च) निद्रा का भवति ?

उत्तरम अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिः निद्रा भवति ।

(छ) योगाङ्गानि कानि ?

उत्तरम यम-नियम-आसन -प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधयोऽष्टावङ्गानि।

(ज) हिंसा का कथ्यते ?

उत्तरम वैरभावना हिंसा कथ्यते।

(झ) अपरिग्रहः कः भवति ?

उत्तरम जन्मकथन्ता सम्बोधः अपरिग्रहः भवति।

'अ' स्तम्भस्य वाक्यांशै : सह 'ब' स्तम्भस्य वाक्यांशान् मेलयत ।

	(अ)		(ब)
(क)	शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यः	1	धारणा
(ख)	स्थिरसुखम्	2	वीर्यलाभः
(ग)	देशबन्ध चित्तस्य	3	सर्वरत्नोपस्थानम्।
(घ)	अस्तेयप्रतिष्ठायाम्	4	विकल्पः
(ङ)	ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायाम्	5	ध्यानम्
(च)	प्रत्येकतानता	6	आसनम्

उत्तराणि

क-	4	ख-	6
ग-	1	घ-	3
ड्-	2	च-	5

अधोलिखितपदानां सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत।

(क) स्वागतम्
सु + आगतम्

(ख) कालांशः
काल + अंश-

(ग) अति+इव
अतीव

(घ) विद्याध्ययनेऽपि
विद्या+अध्ययने +अपि

(ड्) स+उत्साहम्
सोत्साहम्

(च) सम्यग्रूपेण
सम्यक् + रूपेण

(छ) सन्निधिः
सत् + निधिः

अधोलिखितपदानां मूलशब्दं विभक्तिं वचनं च लिखत ।

अस्माकम्- अस्मद् षष्ठीबहुवचनम्

मनसः- मनस् पंचमी/षष्ठीएकवचनम्

चिन्तया- चिन्ता तृतीयाएकवचनम्

अङ्गानि - अङ्ग प्रथमाबहुवचनम्

तस्मिन्- तत् पु. सप्तमीएकवचनम्

महती- महत् स्त्री. प्रथमाएकवचनम्

प्रतिष्ठायाम् - प्रतिष्ठा सप्तमीएकवचनम्

Jharkhandlab.com

चतुर्दशः पाठः	कथं शब्दानुशासनं कर्तव्यम्

jharkhandlab.com

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) कः गरीयान् अस्ति ?
उत्तर - अपशब्दः

(ख) कः ज्यायः अस्ति ?
उत्तर - लघुत्वशब्दोपदेशः

(ग) शब्दानां प्रतिपत्तौ किं कर्तव्यः ?
उत्तर - प्रतिपदपाठः

(घ) बृहस्पतिः कस्मै प्रतिपदशब्दान् उक्तवान् ?
उत्तर- इन्द्राय

(ङ) एकैकस्य शब्दस्य कति अपभ्रंशाः सन्ति?
उत्तर- बहवः

(च) 'इष्टान्' अस्य विलोमपदं किम् ?
उत्तर - अनिष्टान्

(छ) 'कर्तव्यम्' इत्यस्मिन् कः प्रत्ययः प्रयुक्तः?
उत्तर- तव्यत्

(ज) 'कृत्स्नम्' इत्यस्य अर्थं लिखत-
उत्तर - सम्पूर्णम्

2 पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) मनुष्यस्य आयुः कतिवर्षाणि मन्यते?
उत्तर - (क) मनुष्यस्य आयुः शतवर्षाणि मन्यते।

(ख) कस्य नियमेन अभक्ष्यप्रतिषेधो गम्यते?
उत्तर - भक्ष्यस्य नियमेन अभक्ष्यप्रतिषेधो गम्यते।

(ग) ग्राम्यकुक्कुटः भक्ष्यः अभक्ष्यः वा ?
उत्तर - ग्राम्यकुक्कुटः अभक्ष्यः।

(घ) कः ज्यायः अस्ति ?
उत्तर- लघुत्वात् शब्दोपदेशः ज्यायः अस्ति।

(ङ) कः गरीयान् अस्ति?
उत्तर - अपशब्दः गरीयान् अस्ति।

(च) कः इन्द्राय प्रतिपदशब्दान् उक्तवान्?
उत्तर - बृहस्पतिः इन्द्राय प्रतिपदशब्दान् उक्तवान्?

(छ) केन उत्सर्गः कर्तव्यः?
उत्तर - सामान्येन उत्सर्गः कर्तव्यः।

(ज) कतिप्रकारैः विद्योपयुक्ता भवति ?
उत्तर - चतुर्भिः प्रकारैः विद्योपयुक्ता भवति।

3. रेखाङकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) एकैकस्य शब्दस्य बहवः <u>अपभ्रंशाः</u> सन्ति।

(ख) <u>शब्दानां</u> प्रतिपत्तौ प्रतिपदपाठः कर्तव्यः।

(ग) <u>बृहस्पतिः</u> इन्द्राय प्रतिपदशब्दान् उक्तवान्।

(घ) <u>चतुर्भिश्च</u> प्रकारैः विद्योपयुक्ता भवति।

(ङ) <u>सामान्येन</u> उत्सर्गः कर्तव्यः।

उत्तराणि-

(क) एकैकस्य शब्दस्य बहवः के सन्ति।

(ख) केषां प्रतिपत्तौ प्रतिपदपाठः कर्तव्यः।

(ग) कः इन्द्राय प्रतिपदशब्दान् उक्तवान्।

(घ) कैः प्रकारैः विद्योपयुक्ता भवति।

(ङ) केन उत्सर्गः कर्तव्यः।

4. विपरीतार्थैः सह मेलनं कुरुत-

(क)	**भक्ष्यम्**	**तदानीम्**
(ख)	**लघीयान्**	**अनिष्टान्**
(ग)	**एकः**	**अभक्ष्यम्**
(घ)	**इष्टान्**	**गरीयान्**
(ङ)	**इदानीम्**	**बहवः**

उत्तर-

(क)	भक्ष्यम्	अभक्ष्यम्
(ख)	लघीयान्	गरीयान्
(ग)	एकः	बहवः
(घ)	इष्टान्	अनिष्टान्
(च)	इदानीम्	तदानीम्

5. रिक्तस्थानानि पूरयत-

(प्रतिपदपाठः, कर्तव्यः, शब्दोपदेशाः, अपभ्रंशाः, अपशब्दोपदेशाः, अभक्ष्यप्रतिषेधः, शब्दानुशासनम्)

(क) इदानीं......... कर्तव्यम्।

(ख) भक्ष्यनियमेन .... गम्यते।

(ग) गरीयान् ....।

(घ) एकैकशब्दस्य बहवः .... भवन्ति।

(ङ) लघुत्वात्............... ।

(च) शब्दोपदेशे सति शब्दानां प्रतिपत्तौ ....।

उत्तर -

(क) इदानीं...शब्दानुशासनम्....... कर्तव्यम्।

(ख) भक्ष्यनियमेन ......अभक्ष्यप्रतिषेधः.... गम्यते।

(ग) गरीयान् ......अपभ्रंशाः.......।

(घ) एकैकशब्दस्य बहवः ......अपशब्दोपदेशाः...... भवन्ति।

(ङ) लघुत्वात्......शब्दोपदेशाः.......... ।

(छ) शब्दोपदेशे सति शब्दानां प्रतिपत्तौ ......कर्तव्यः.......।

6. प्रकृतिप्रत्ययं विभज्य लिखत-

(क) कर्तव्यः- **(ख) उक्तः-**

(ग) कृतम्- **(घ) उपयुक्ता-**

(ङ) उपदिष्टः- **(च) करणीयम्-**

(छ) गतः- **(ज) स्थितः-**

उत्तर –

(क) कर्तव्यः- कृ+तव्यत् (ख) उक्तः- वच्+क्त
(ग) कृतम्- कृ+क्त (घ) उपयुक्ता- उप+युज्+क्त
(ङ) उपदिष्टः- उप+दिश्+क्त (च) करणीयम्- कृ+अनीयर्
(छ) गतः- गम्+क्त (ज) स्थितः- स्था+क्त

7. सन्धिविच्छेदं कुरुत-

(क) शब्दोपदेशः--------------------

(ख) गौरिति-----------------

(ग) लघुत्वाच्छब्दोपदेशः---------

(घ) पुनरत्र-----------------

(घ) इत्येवम्------------------

(ङ) अथैतस्मिन्----------------

(च) प्रतिपदोक्तानाम्-----------

(छ) गाव्यादिषूपदिष्टेषु-----------

(ज) इष्टान्वाख्यानम्----------------

उत्तर –

(क) शब्दोपदेशः-----शब्द+उपदेशः
(ख) गौरिति------ गौः+ इति
(ग) लघुत्वाच्छब्दोपदेशः------ लघुत्वात् + शब्द + उपदेशः
(घ) पुनरत्र------ पुनः + अत्र
(घ) इत्येवम्-------- इति+ एवम्
(ङ) अथैतस्मिन्----- अथ+ एतस्मिन्
(च) प्रतिपदोक्तानाम्----- प्रतिपद+ उक्तानाम्
(छ) गाव्यादिषूपदिष्टेषु----- गाव्+ आदिषु+ उपदिष्टेषु
(ज) इष्टान्वाख्यानम्--------इष्ट+अनु+ आख्यानम्

8. (I) विकल्पेभ्यः समीचीनोत्तरं चिनुत –

(क)' कथं शब्दानुशासनं कर्तव्यम् ' इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः?
(i) महाभाष्यात् (ii) रघुवंशात्
(iii) किरातार्जुनीयात् (iv) मेघदूतात्

(ख) 'महाभाष्यम्' इत्यस्य रचयिता कः ?
(i) माघः (ii) श्रीहर्षः
(iii) कालिदासः (iv) पतञ्जलिः

(ग) कति प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति ?
(i) चतुर्भिः (ii) पंचभिः
(iii) षडभिः (iv) अष्टभिः

(घ) केषां प्रतिपत्तौ प्रतिपदपाठः कर्तव्यः?
(i) अर्थानाम् (ii) वाक्यानाम्
(iii) शब्दानाम् (iv) वाच्यानाम्

(ङ) कः इन्द्राय प्रतिपदशब्दान् उक्तवान्?
(i) सूर्यः (ii) बृहस्पतिः
(iii) अग्निः (iv) वरुणः

(च) 'पुनरत्र' इत्यस्य सन्धिविच्छेदं कुरुत-
(i) पुनर+ त्र (ii) पुन+ रत्र
(iii) पुनः+ अत्र (iv) पु+ नरत्र

(छ) 'लघीयान्' इत्यस्य विलोमपदं चिनुत-
(i) गरीयान् (ii) महान्
(iii) परमाणून् (iv) कुर्वन्

(ज) गावी गोणी गोपोतलिका गोता इत्यादयः कस्य शब्दस्य अपभ्रंशाः?
(i) गौः (ii) ग्रामः
(iii) गम् (iv) गच्छ

उत्तराणि–

(क) (i) महाभाष्यात् (ख) (iv) पतञ्जलिः
(ग) (ii) चतुर्भिः (घ) (iii) शब्दानाम्
(ङ) (ii) बृहस्पतिः (च) (iii) पुनः+ अत्र
(छ) (i) गरीयान् (ज) (i) गौः

==

(II)

1. मनुष्यस्य आयुः कति वर्षाणि मन्यते ?
i) सहस्रम् ii) शतम्
iii) नवति iv) कोटि

2. केन नियमेन अभक्ष्यप्रतिषेधो गम्यते ?
i) भक्ष्य नियमेन ii) आअभक्ष्यनियमेन
iii) अभक्ष्यनियमेन iv) फ़निनियमेन

3. ग्राम्यकुक्कुटः भक्ष्यः अभक्ष्यः वा ?
i) भक्ष्यः ii) अभक्ष्यः
iii) भक्ष्याभक्ष्य iv) न भक्ष्यः न अभक्ष्यः

4. पाठानुसारं कः ज्यायः अस्ति ?
i) अपभ्रन्शः ii) असाधुशब्दः
iii) साधुशब्दः iv) लघुशब्दः

5. 'कथं शब्दानुशासनं कर्तव्यम्' पाठः कस्मात् ग्रन्थात् उद्धृतः ?
i) रामायणात् ii) महाभारतात्
iii) हितोपदेशात् iv) महाभाष्यात्

6. "महाभाष्यम्" इत्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता कः ?
i) महर्षिः पतञ्जलिः ii) वेदव्यासः
iii) कालिदासः iv) पाणिनिः

Jharkhandlab.com

7. कः इन्द्राय प्रतिपदशब्दान् उक्तवान् ?
i) कुबेरः ii) अग्निः
iii) बृहस्पतिः iv) वरुणः

8. पाठानुसारं विद्या कतिप्रकारैः उपयुक्ता भवति ?
i) चतुर्भिः ii) तिसृभिः
iii) षडभिः iv) सप्तभिः

9. भक्ष्यनियमेन....... ....गम्यते .अधोलिखितेषु शब्देषु उचितं शब्दं चित्त्वा रिक्तस्थानं पूरयत.....
i) अपशब्दोपदेशेन ii) प्रतिपदपाठेन
iii) अभक्ष्यस्वीकारः iv) अभक्ष्यप्रतिषेधः

10. 'इदानीम्' इत्यस्य विलोमपदं चिनुत.......
i) भवानी ii) तदानीम्
iii) तदानिं iv) तदनिम्

11. 'कर्तव्यम्' इत्यस्मिन् पदे कः प्रत्ययः ?
i) क्त ii) क्त्वा
iii) तव्यत् iv) अनीयर

12. 'चतुर्भिश्च' इत्यस्य सन्धिविच्छेदम् कुरुत....... ..
i) चतुर + भिश्च ii) चतुर्भि + च
iii) चतुः +भिः +च iv) चतुर्भिः +च

13. 'कृतघ्नं' इत्यस्य पदस्य अर्थं चिनुत.......
i) संपूर्णम् ii) अग्निः
iii) वायुः iv) कृतज्ञता

उत्तराणि ...

1. Ii	2. I
3. Ii	4. Iii
5. Iv	6. I
7. Iii	8. I
9. Iv	10. Ii
11. Iii	12. Iv
13. I	

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

संस्कृत
हल प्रश्न-पत्र

Total Time: 1 Hours 30 minute | Full Marks : 40 | कुल समय :1 घंटे 30 मिनिट | पूर्णांकः 40

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

सामान्य-निर्देशाः

. सर्वे प्रश्नाः समानाइकाः

. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।

अस्मिन् प्रश्नपत्रे 40 वस्तुनिष्ठाः प्रश्नाः सन्ति।

प्रदतंषु विकल्पेषु उचितम् उत्तरं चिनुत।.

अपठितावबोधनम्

अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तान् प्रश्नान् विकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत –

अयम् अस्माकं देशः। वयम् अस्य पुत्राः स्मः। अतो वयं परस्परं भ्रातरः। एकोऽस्माकं शासनम्। एकस्मदाष्ट्रपति एकश्चैव प्रधानमंत्री संविधानमप्येकं येन शासनयन्त्रं चाल्यते यदि देशोऽस्माकं समृद्घो भविष्यति तर्हि सर्वे देशीयाः समृद्धाः भविष्न्ति। यदि अस्मद्देशः सम्मानं लप्स्यते तर्हि निवासिनोऽत्रत्याः सम्मानिताः भविष्यन्ति।

प्रश्नाः

1. **वयं परस्परं के ?**
(क) मातरः (ख) पितरः
(ग) भातर (घ) मित्राणि

2. **देशे सम्मानिते के सम्मानिताः भवन्ति?**
(क) शब्दः (ख) निवासिनः
(ग) वैदेशिकाः (घ) न कोऽपि

3. **'अपमानिताः' अस्य विलोमपदम् अत्र कि प्रयुक्तम् ?**
(क) सम्मानिताः (ख) समृद्धों
(ग) लप्स्यते (घ) शासनयन्त्रम्

4. **लप्स्यते' अस्य कर्तृपदं किम्?**
(क) वयम् (ख) यूयम्
(ग) त्वम् (घ) देशः

अधोलिखितं पद्यं गद्यांशं वा पठित्वा प्रदतान् प्रश्नान् विकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत-

पदयम्-

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।

विशेषतः सर्वविदो समाजे विभूषणं मौनपण्डितानाम्।।

5 **अपण्डितानां भूषणं किम् ?**
(क) वाचालता (ख) अट्टहासम्
(ग) मौनम् (घ) रुदन्

6. **विधात्रा कस्याः छादनं विनिर्मितम् ?**
(क) विदुषः (ख) वृक्षस्य
(ग) शरीरस्य (घ) अजतायाः

7. **मूर्खतायाः कः पर्यायः**
(क) अज्ञतायाः (ख) विदुषः
(ग) बुद्धिमान् (घ) छादनम्

8. **अज्ञानाम् अस्य कि विलोमपदम् ?**
(क) मूर्खाणाम (ख) मूढानाम्
(ग) जडमतीनाम् (घ) सर्वविदाम्

पद्यम्

पश्चात् वहति विपुलं तच्च धूनोत्यजस्रम्

दीर्घग्रीवः स भवति खुरास्तस्य चत्वार एव।

शष्पाण्यति प्रकिरति शकृत्पिण्डकानाम्रमात्रान्,

किं व्याख्यानैर्व्रजति स पुनरमेह्यति यामः।।

9. **दीर्घग्रीवः कः भवति ?**
(क) गजः (ख) अश्वः
(ग) सिंहः (घ) मूषकः

10. **तस्य कति खुराः ?**
(क) चत्वारः (ख) पंच
(ग) षट् (घ) सप्त

11. **अग्रे अस्य विलोमपदं किम?**
(क) विपुलम् (ख) तच्च
(ग) अजस्रम् (घ) पश्चात्

12. **कः शकृत्पिण्डकानाम्रमात्रान् प्रकिरति?**
(क) गजः (ख) अश्वः
(ग) सिंहः (घ) मूषकः

अधुना मम गमनसमयः समुपागतः एव।मम दायित्वहस्तान्तरणपत्रकं सज्जीकुरु। अहम् अधुना द्वित्राणां दिवसानां सकारणमवकाशं स्वीकरिष्यामि पुनः तदनु स्वीकरिष्यामि दीर्घावकाशम्। यदि कस्मैचिद् अज्ञातेन मया रुक्षो व्यवहारः प्रदर्शितः स्यात् तदर्थं ते मह्यमुदारचित्तेन क्षमा प्रदास्यन्ति, इति सर्वेभ्यो निवेदयतु। अनन्तरं सर्वे अश्रुलहृदयैः सौप्रस्थानिकीः ज्ञापितवन्तः।

Jharkhandlab.com

प्रश्ना

13. **दीर्घावकाशम् कः स्वीकरिष्यति ?**
(क) श्रीदासः (ख) सुश्री मेरी
(ग) श्रीनायारः (घ) आदेशपालः

14. **कीदृशेन चितेन क्षमां प्रदास्यन्ति?**
(क) कठोरचित्तेन (ख) उदारचरितेन
(ग) हर्षितचितेन (घ) दुःखितचितेन

15. **श्रीनायारः कतीनां दिवसानाम् अवकाशं ग्रहीष्यति ?**
(क) द्वित्राणाम् (ख) सप्तानाम्
(ग) षण्णाम् (घ) अष्टानाम्

16. **'कठोरः' इत्यर्थे किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?**
(क) अधुना (ख) क्षमा
(ग) रुक्षो (घ) उदारः

17. **'पा+ क्त्वा =?**
(क) पित्वा (ख) पीत्वा
(ग) पात्वा (ङ) पिबित्वा

18. **'दर्शनीयम्' पदे कः प्रत्ययः प्रयुक्तः ?**
(क) यम् (ख) नीयम्
(ग) णिनि (घ) अनीयर्

19. **'गन्तुम् 'इत्यस्य प्रत्ययं वियोज्य लिखत-**
(क) तुम् (ख) उन्
(ग) तुमुन् (घ) गम्

20. **'दृश्+ तव्यत्'अस्य प्रत्ययसंयोजनं कृत्वा लिखत-**
(क) द्रष्टव्यम् (ख) दृष्टव्यम्
(ग) दृशतव्यत् (घ) दृष्टम्

21. **'कृष्णः सर्पः अस्य समस्तपदं किम् ?**
(क) कृष्णसर्पम् (ख) सर्पकृष्णः
(ग) कृष्णसर्पः (ग) उपकृष्ण :

22. **'गंगायाः समीपम् 'इत्यस्य समस्तपदं चिनुत ।**
(क) गंगासमीपम् (ख) उपगंगम्
(ग) समीपम् गंगा (घ) गंगे समीपे

23. **'राजपुरुषः' अस्य सामासिकविग्रहं किम् ?**
(क) राज्ञः पुरुषः (ख) राजन् पुरुषः
(ग) राजा पुरुषः (घ) पुरुषः राजा

24. **'घन इव श्यामः' अस्य समस्तपदं चिनुत**
(क) घनिवश्यामः (ख) घनाश्यामः
(ग) घनश्यामः (घ) घनेश्यामः

25. **'वसन्त + ऋतुः' अस्य सन्धिपदं किम् ?**
(क) वसन्तर्तुः (ख) वसन्तऋतु
(ग) वसन्त्रतुः (घ) वसन्तार्तुः

26. **'स्वागतम्' पदस्य सन्धिविच्छेदं चित्वा लिखत-**
(क) स्व+गतम् (ख) सु+आगतम्
(ग) स्व+आगतम् (घ)सु+वागतम्

27. **'एक+एकम्' अस्य सन्धिपदं किम् ?**
(क) एकाएकम् (ख) एककम्
(ग) एकैकम् (घ) द्वौ

28. **अत्र+एव**
(क) अत्रेव (ख) अत्रएव
(ग) अत्रैव (घ) अत्रीव

29. **गोपालः----------बधिरः। रिक्तस्थानाय उचितं पदं चिनुत ।**
(क) कर्णेन (ख) कर्णाय
(ग) कर्णात् (घ) कर्णस्य

30. **'नमः शिवाय' नमः योगे का विभक्तिः प्रयुक्ता?**
(क) द्वितीया (ख) तृतीया
(ग) चतुर्थी (घ) पंचमी

31. **<u>परिश्रमं</u> विना साफल्यं न मिलति । रेखाङ्क्तिपदे का विभक्तिः प्रयुक्ता?**
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया
(ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

32. **कंसः-----------कुप्यति। उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत।**
(क) कृष्णम् (ख) कृष्णों
(ग) कृष्णाय (घ) कृष्णस्य

33. **'नीरम्' अस्य कोऽर्थ ?**
(क) दुग्धम (ख) सरोवरम्
(ग) धेनू (घ) जलम्

34. **'वसुन्धरा' अस्य अर्थं चिनुत-**
(क) आकाशः (ख) पृथिवी
(ग) इन्द्रः (घ) अग्निः

35. **'नीतिशतकम् ' अस्य रचनाकारः कः?**
(क) भवभूतिः (ख) भर्तृहरिः
(ग) भारविः (घ) बाणभट्टः

36. **भवभूतेः रचनां चिनुत ।**
(क) नीतिशतकम् (ख) किरातार्जुनीतम्
(ग) उत्तररामचरितम् (घ) गंगालहरी

37. **'किरातार्जुनीयम्' कस्य रचना?**
(क) भवभूतेः (ख) भारवेः
(ग) कालिदासस्य (घ) श्रीहर्षस्य

38. **'रघुवंशम्' कस्य रचना ?**
(क) भवभूतेः (ख) भर्तृहरेः
(ग) बाणभट्टस्य (घ) कालिदासस्य

39. **'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् कस्य विषये प्रसिद्धः ?**
(क) भवभूतेः (ख) बाणभट्टस्य
(ग) भारवेः (घ) कालिदासस्य

40. **'विक्रमस्यौदार्यम्' पाठः कस्मात् ग्रंथात् उद्धृतः-**
(क) सिंहासनद्वात्रिंशिकायाः (ख) नीतिशतकात्
(ग) रामायणात् (घ) महाभारतात्

उत्तर

1 - ग	2 - ख	3 - क	4 - घ	5 - ग	6 - घ	7 - क
8 - घ	9 - ख	10 - क	11 - घ	12 - ख	13 - ग	14 - ख
15 - क	16 - घ	17 - ख	18 - घ	19 - ग	20 - क	21 - घ
22 - ख	23 - क	24 - ग	25 - क	26 - ख	27 - ग	28 - ग
29 - क	30 - ग	31 - ख	32 - ग	33 - घ	34 - ख	35 - ख
36 - क	37 - ख	38 - घ	39 - ख	40 - क		

Jharkhandlab.com

झारखंड अधिविद्य परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION 2023

संस्कृत

हल प्रश्न-पत्र

Total Time: 1 Hours 30 minute | Full Marks : 40 | कुल समय :1 घंटे 30 मिनिट | पूर्णांकः 40

विषयनिष्ठ प्रश्नोत्तर

General Instructions / सामान्य निर्देश :

1. Examinees are required to answer in their own words as far as Practicable.
परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2. This question paper has three Sections: A, B and C. Total number Of questions is 19.
इस प्रश्न पत्र में तीन खण्ड A, B एवं C हैं। कुल प्रश्नों की संख्या 19 है।

3. Section-A Question Nos. 1-7 are very short answer type. Answer Any 5 questions. Each question carries 2 marks.
खण्ड - A में प्रश्न संख्या 1- 7 तक अति लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। इनमें से किन्हों 5 प्रश्नों के उत्तर दें । प्रत्येक प्रश्न की अधिमानता 2 अंक निर्धारित है ।

4. Section-B Question Nos. 8- 14 are short answer type. Answer any 5 questions. Each question carries 3 marks.
भाग- B में प्रश्न संख्या 8-14 तक लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। इनमें से किन्हीं 5 प्रश्नों के उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न की अधिमानता 3 अंक निर्धारित है।

5. Section C Question Nos. 15-19 are Long answer type. Answer any Three questions. Each question carries 5 marks.
भाग - C में प्रश्न संख्या 15 19 तक दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। इनमें से किन्हीं 3 प्रश्नों के उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न की अधिमानता 5 अंक निर्धारित है ।

सामान्यनिर्देशाः

1. **सर्वेषाम् प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृते एवं कर्तव्याणि ।**
2. **प्रश्नानां संख्याः 19 सन्ति ।**
3. **प्रश्नसंख्या 1 तः 7 पर्यन्तम् अतिलघूत्तरीयाः प्रश्नाः सन्ति । अस्य कृते 2 - 2 अंकौ निर्धारितौ स्तः । केचन पंच प्रश्नान् उत्तरत ।**
4. **प्रश्नसंख्या 8 तः 14 पर्यन्तम् लघूत्तरीयाः प्रश्नाः सन्ति । अस्य कृते 3 - 3 अंकाः निर्धारिताः । केचन पंचैव प्रश्नाः समाधेयाः ।**
5. **प्रश्नसंख्या 15 तः 19 पर्यन्तम् दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः सन्ति । अस्य कृते 5 - 5 अंकाः निर्धारिताः । केचन त्रयैव प्रश्नान् उत्तरत ।**

Section-A / खंड -A

(अपठितांशावबोधनम्)

निर्देशः अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रदत्तान् प्रश्नान् निर्देशानुसारम् उत्तरत-

संसारस्य सर्वेषां प्राणिनां जीवने जलस्य महत्त्वम् अत्यधिकं वर्तते । जलेन एवं मानवानां शरीरं किं वा अखिलानां जीवजन्तूनां वृक्षादीनां चापि देहः जलेन एव पुष्यते । योऽपि जनः जलस्य प्रयोग करोति सः एतदपि जानातु यद् जलस्य संरक्षणं सदैव सर्वत्र च अनिवार्यम् । यदि कथमपि जलं न स्यात् तर्हि सर्वमेव जगद् विनष्टं भविष्यति ।

प्रश्नाः

1. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-2**
   (क) मानवानां शरीरं केन पुष्यते ?
   (ख) यदि जलं न स्यात् तर्हि किं भविष्यति ?

2. **यथानिर्देशम् उत्तरत-2**
   (क) 'भविष्यति' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम् ?
   (ख) अत्र 'शरीरम्' अस्य कः पर्यायः ?
   (ग) 'सर्वेषां प्राणिनाम्' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम् ?
   (घ) "सः" इति सर्वनामपदं कस्य कृते प्रयुक्तम् ?

(पठितावबोधनम्)

निर्देशः- अधोलिखितं गद्यांश, पद्यं, नाट्यांशं च पठित्वा प्रदत्तान् प्रश्नान् निर्देशानुसारं संस्कृतेन उत्तरत-

गद्यांश-

"एवं चतुर्णां परस्परं विवादो लग्नः । ततो ब्राह्मणो राजसमीपमागत्य चतुर्णां विवादवृतान्तमकथयत् । राजापि तच्छ्रुत्वा तस्मै ब्राह्मणाय चत्वार्यपि रत्नानि ददौ । इति कथयित्वा पुत्तलिका राजानमवदत्, 'भो राजन् ! त्वय्येवंविध - सहजमौदार्यं विद्यते चेदस्मिन् सिंहासने समुपविश । तच्छ्रुत्वा राजा तूष्णीमासीत् ।"

3. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-2**
   (क) राजा ब्राह्मणाय कानि ददौ ?
   (ख) पुतलिका राजानं किम् अवदत् ?

4. **यथानिर्देशम् उत्तरत -2**
   (क) 'कथयित्वा' पदे कः प्रत्ययः प्रयुक्तः ?
   (ख) 'कलहः' अस्य पर्यायपदम् अत्र किं प्रयुक्तम् ?
   (ग) 'दूरम्' अस्य विलोमपदं किम् ?
   (घ) 'अवदत्' पदे कः लकारः प्रयुक्तः ?

पद्यम्

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति ददातिकाले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ।।

jharkhandlab.com

5. पूर्णवाक्येन उत्तर-2

(क) मित्रं कान् प्रकटीकरोति ?

(ख) मित्रं कस्मात् निवारयति ?

नाट्यांशः

"अरुन्धती -अति जवेन दूरमतिक्रान्तः सः चपलः कथं दृश्यते ? (प्रविश्य)
बटवः-पश्यतु कुमारस्तावदाश्चर्यम् ।

लवः- दृष्टमवगतं च । नूनमाश्वमेधेकोऽयमश्वः ।

बटवः- कथं ज्ञायते ?

लवः- ननु मूर्खाः ! पठितमेव युष्माभिरपि तत्काण्डम् । किं न पश्यथ? प्रत्येकं शतसंख्याः कवचिनो दण्डिनो निषङ्गणश्च रक्षितारः । यदि च विप्रत्ययस्तत्पृच्छत ।"

6. पूर्णवाक्येन उत्तरत-2

(क) कः दूरमतिक्रान्तः ?

(ख) अश्वः कीदृशः ?

7. यथानिर्देशम् उत्तरत-2

(क) 'पश्यतु' अस्याः क्रियायाः कर्तृपदं किम् ?

(ख) 'दृश्यते' अस्य मूलधातुः कः ?

(ग) 'समीपम्' अस्य विलोमपदम् अत्र किं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'शतसंख्याः रक्षितारः' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम् ?

Section-B / खंड -B

8. अधोलिखितश्लोकस्य अन्वयं पूर्ण कुरुत- 3
श्लोकः

अन्धतमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ।

ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः ।।

अन्वयः- ये अविद्याम् (I) ....(ते) अन्धं तमः (ii)........

य उ (iii)..........रताः ते ततः भूयः इव तमः (प्रविशन्ति) ।

9. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुतः-

(क) तस्य राज्येन सह कश्चित् सम्पर्कः नास्ति ।

(ख) कौत्सः वरतन्तोः शिष्यः आसीत् ।

(ग) शुकनासः चन्द्रापीडम् उपदिशति ।

10. श्लोकांशान् मेलनं कुरुत- 3

	'अ'	'ब'
(क)	अस्ति यद्यपि सर्वत्र	मा फलेषु कदाचन ।
(ख)	कर्मण्येवाधिकारस्ते	गुह्यमाख्याति पृच्छति ।
(ग)	ददाति प्रतिगृह्णाति	नीरं नीरज-राजितम् ।

11. कोष्ठकेषु प्रदत्तपदेषु उचितं विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-3

(क) .... पिता सह वनं गच्छति । (पुत्र)

(ख) .... बहिः मन्दिरं शोभते । (ग्राम)

(ग) .... मिष्टान्नानि रोचते । (बालक)

12. वाक्यनिर्माणं कुरुत - 3

(क) गृहम् -

(ख) यूयम्-

(ग) पुष्पाणि-

13. अशुद्धिशोधनं कुरुत-3

(क) चत्वारः बालिकाः गच्छन्ति ।

(ख) वयम् आम्राणि खादन्ति ।

(ग) सः श्वः पाटलीपुत्रम् अगच्छत् ।

14. सन्धिविच्छेदं कुरुत- 3

(क) इत्यादिः

(ख) दिगम्बरः =

(ग) कालांशः =

Section-C / खंड -C

15. चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषासहायतया पंच वाक्यानि रचयत -5

मञ्जूषाः- जनाः, ध्वनिविस्तारकयन्त्रम्, गुरुः, बालकः,श्रृणवन्ति, उपदिशति, स्वच्छम्, पुस्तकम्।

16. विद्यालयशुल्कक्षमापनार्थं स्वप्राचार्यं प्रति एकम् आवेदनपत्रं लिखत। 5

17. मञ्जुषातः उचितसङ्केतान् गृहीत्वा अधोलिखितां कथां पूरयित्वा पुनः लिखत। 5

मञ्जूषाः

गर्वेण, दास्यति, त्वमेव, सम्मानितवान्, असत्यवादनम् ।

एकः अहङ्कारी राजा पण्डितान् आहूय अपृच्छत् - "वदत । कः श्रेष्ठः अहं वा ईश्वरः वा।" व्याकुलाः पण्डिताः अचिन्तयन् किं कुर्मः ? इतः प्राणहानिः ततः...... (1)। एकः वृद्धः प्रणम्य अवदत् "राजन् ! निस्संदेहं .....2....श्रेष्ठः न ईश्वरः।राजा ..(3)....... मस्तकम् उन्नयन् अपृच्छत् - "तत् कथम् ?" वृद्धपण्डितः अवदत् - "राजन् ! त्वम् अस्मान् राज्यात् निष्कासवितुं क्षमः न तु ईश्वरः । निष्कासयति चेत् कुत्र स्थानं....(4).....?" राजा स्वमूर्खताम् अवगतवान् वृद्धं च .... (5) ....।

18. नाट्यसाहित्यस्य वैशिष्ट्यं प्रतिपादयत । 5

Jharkhandlab.com

19. अधोलिखितरचनानां लेखकानां नामानि लिखत- (केवलं पंचानाम्) 5

(क) पाषाणीकन्या

(ख) योगसूत्रम्

(ग) समुद्रसङ्गमः

(घ) शिवराजविजयम्

(ङ) कादम्बरी

(च) ईशावास्योपनिषद् ।

SUBJECTIVE

उत्तराणि-

1. क. मानवानां शरीरं जलेन पुष्यते।

ख. यदि जलम् न स्यात् तर्हि सर्वमेव जगद् विनष्टं भविष्यति।

2. क. जगद् ख. देहः

ग. सर्वेषाम् घ. जनस्य

3. क. राजा ब्राह्मणाय चत्वारि रत्नानि ददौ।

ख. पुतलिका राजानम् अवदत्- 'भो राजन्! त्वय्येवंविध - सहजमौदार्यं विद्यते चेदस्मिन् सिंहासने समुपविश।

4. क. क्त्वा ख. विवादः

ग. समीपम् घ. लङ्गलकारः

5. क. मित्रम् गुणान् प्रकटीकरोति।

ख. मित्रम् पापात् निवारयति।

6. क. लवः दूरमतिक्रान्तः।

ख. अश्वः अश्वमेधयज्ञस्य अस्ति।

7. क. लवः ख. दृश्

ग. दूरम् घ. शतसंख्याः

8. (i) उपासते (ii) प्रविशन्ति

(iii) विद्यायां

9. क. केन ख. कः

ग. कम्

10. क. अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजराजितम्

ख. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

ग. ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।

11. क. पुत्रेण ख. ग्रामात्

ग. बालकाय

12. क. अहं गृहं गच्छामि।

ख. यूयं कुत्र गच्छथ?

ग. राधा पुष्पाणि चिनोति।

13. क. चतस्रः बालिकाः गच्छन्ति।

ख. वयम् आम्राणि खादामः।

ग. सः श्वः पाटलिपुत्रं गमिष्यति।

14. क. इति + आदिः ख. दिक् + अम्बरः

ग. काल + अंशः

15. गुरुः उपदिशति।

जनाः तस्य उपदेशं ध्यानेनशृण्वन्ति।

एकः बालकः प्रश्नं पृच्छति।

गुरोः हस्ते एकं पुस्तकम् अपि अस्ति।

चित्रे एकः ध्वनिविस्तारकयन्त्रम् अपि दृश्यते।

16. सेवायाम्

प्राचार्यमहोदय

राजकीयउच्चविद्यालयः, रामगढ़नगरम्

विषयः - विद्यालयशुल्कक्षमापनार्थम् एकम् आवेदनपत्रम् ।

महोदय,

सादरं निवेदनम् अस्ति यत् अहं द्वादशकक्षायाः छात्रः अस्मि। मम पिता एकः निर्धनः कृषकः अस्ति। परिवारे अष्ट सदस्याः सन्ति। सर्वेषां भरण-पोषणं मम पिता एव करोति, येन सः मम विद्यालयशुल्कं दातुम् असमर्थः अस्ति। अहं कक्षायां सदा प्रथमस्थानं प्राप्नोमि।

अतः कृपया मम विद्यालयशुल्कं क्षमा करोतु भवान्, अहं सदैव भवतः कृतज्ञः भविष्यामि।

भवतः कृपाभिलाषी

मोहितकुमारः

दिनाङ्क-26/6/2023

वर्ग- द्वादशः

क्रमांकः- 01

राजकीयउच्चविद्यालयः

रामगढ़नगरम्

17. (i) असत्यवादनम् (ii) त्वमेव

(iii) गर्वेण (iv) दास्यति

(v) सम्मानितवान्

18. **नाट्यसाहित्यम्**

संस्कृतसाहित्ये तिस्रः विधाः प्रमुखाः सन्ति- गद्यसाहित्यः पद्यसाहित्यः नाट्यसाहित्यः च। नाट्यसाहित्यः 'दृश्यकाव्यः' इत्यपि कथ्यते। अस्य त्रीणि तत्त्वानि सन्ति- वस्तु (कथावस्तु) नेता (अभिनेता इत्यादयः) रसः (नव रसः) च। नाटके पंच सन्धयः भवन्ति- मुखं, प्रतिमुखं, गर्भं,

Jharkhandlab.com

विमर्शं, निर्वहणं, च। एतदनुसारेण पंच अर्थप्रकृतयः- बीज-बिन्दु-पताका-प्रकरी-कार्यम् च। संस्कृतनाटककारेषु प्रमुखाः सन्ति- भासः-कालिदासः-शूद्रकः-भवभूतिः इत्यादयः।

कालिदासस्यत्रीणि नाटकानि सन्ति- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् च। शूद्रकस्य मृच्छकटिकम्, भवभूतेः मालतीमाधवम्, उत्तररामचरितम्, भासस्य प्रतिमानाटकम् इत्यादयः

नाट्यसाहित्यस्य प्राणाः सन्ति।

नाटकं पंचमवेदः अपि कथ्यते।

19. क. पाषाणीकन्या – चन्द्रशेखरदासवर्मा

ख. योगसूत्रम् - महर्षिः पतञ्जलिः

ग. समुद्रसङ्गमः - दारा शिकोहः

घ. शिवराजविजयम् – पं अम्बिकादत्तव्यासः

ङ. कादम्बरी - बाणभट्टः

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

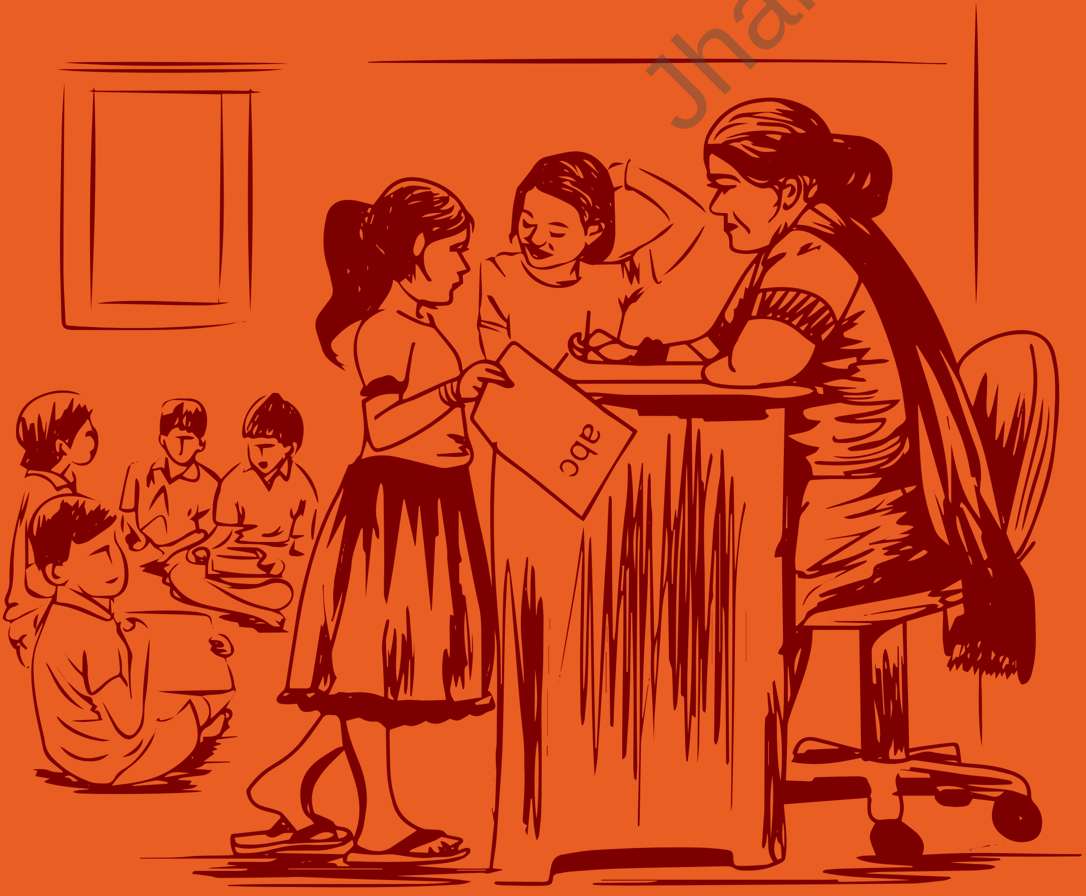

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi